ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

निराला की काव्यदृष्टि और राम की शक्तिपूजा

Devendra Kumar Gupta

Assistant Professor, Hindi, Government College, Dholpur, Rajasthan, India

सार

राम की शक्तिपूजा, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित काव्य है। निराला जी ने इसका सृजन २३ अक्टूबर १९३६ को सम्पूर्ण किया था। कहा जाता है कि इलाहाबाद(प्रयागराज) से प्रकाशित दैनिक समाचारपत्र 'भारत' में पहली बार 26 अक्टूबर 1936 को उसका प्रकाशन हुआ था। इसका मूल निराला के कविता संग्रह 'अनामिका' के प्रथम संस्करण में छपा। राम की शक्ति पूजा 23 अक्टूबर 1936 को रची गई या पूरी हुई और अनुमान है कि वह 26 अक्टूबर 1936 को भारत पत्र में प्रकाशित हुई लेकिन आज भारत (दैनिक, इलाहाबाद) का वह अंक सुलभ नहीं है इसलिए इस कविता के मूल निकटतम पाठ के लिए अनामिका के प्रथम संस्करण में वह जिस रूप में छपी थी उसी रूप पर निर्भर करना पड़ता है।

अनामिका में छपे इस कविता के उस रूप को देखने से पता चलता है कि सरोज स्मृति की तरह यह कविता भी अनुच्छेदों में विभाजित थी। लेकिन परिवर्ती संस्करणों में उस विभाजन को समाप्त कर दिया गया। लम्बे अंतराल के बाद इस कविता को महत्त्व देकर फिर से निराला रचनावली में स्थान दिया गया। इसे संयोग ही कहेंगे कि राम की शक्ति पूजा में भी उतने ही अनुच्छेद हैं जितने सरोज स्मृति में। इन अनुच्छेदों की कुल संख्या 11 है और ये प्रसंग के अनुकूल ही आकार में छोटे-बड़े है। यह कविता 312 पंक्तियों की एक ऐसी लम्बी कविता है जिसमें शक्ति पूजा नामक छंद का प्रयोग है यह छंद निराला जी का अपना मौलिक छंद है। यह कविता चूँकि एक कथात्मक कविता है इसलिए संश्लिष्ट होने के बावजूद भी इसकी संरचना अपेक्षाकृत सरल है।इस कविता का कथानक प्राचीन काल से सर्वविख्यात रामकथा के एक अंश से है।किन्तु कृतिवास और राम की शक्ति पूजा में पर्याप्त भेद है पहला तो यह की एक ओर जहां कृतिवास में कथा पौराणिकता से युक्त होकर अर्थ की भूमि पर सपाटता रखती है तो वही दूसरी ओर राम की शक्ति पूजा नामक कविता में कथा आधुनिकता से युक्त होकर अर्थ की कई भूमियों को स्पर्श करती है। इसके साथ साथ कवि निराला ने इसमें युगीन-चेतना व आत्मसंघर्ष का मनोवैज्ञानिक धरातल पर बड़ा ही प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत किया है। निराला यदि कविता के कथानक की प्रकृति को आधुनिक परिवेश और अपने नवीन दृष्टिकोण के अनुसार नहीं बदलते तो यह केवल अनुकरण मात्र रह जाती। लेकिन उन्होंने अपनी मौलिकता का प्रमाण देने के लिए ही इस रामकथा के अंश में कई मौलिक प्रयोग किये जिससे यह रचना कालजयी सिद्ध हुई।

राम की शक्ति पूजा का मुख्य कथानक कृतिवास की बंग्ला रामायण से लिया गया है। 'शक्तिपूजा' में 'शक्ति संधान' की रचनात्मक व्याख्या है और इसका मूलसूत्र जाम्बवान के परामर्श में है। हिन्दी के शक्ति काव्य का प्रतिमान है। रचना प्रक्रिया और भावबोध के स्तर पर प्रस्तुत कविता आचार्य शुक्ल द्वारा प्रतिपादित 'लोकमंगल की साधना' की कृति है। इस कविता में एक ओर यथार्थ से जूझते हुए मानव का अन्त्तद्वन्द्व है,तो दूसरी ओर एक सांस्कृतिक सामाजिक प्रक्रिया है। एक पौराणिक प्रसंग के माध्यम से यह कविता अपने युग को उजागर करती है।

अपने प्रतिकार्थ में शक्तिपूजा नैतिक शक्ति की सिद्धि का काव्य है। इस कविता का रचनाकाल पराधीन भारत का वह गाँधीवादी युग था जिसमें आततायी अंग्रेजी शासन के विरूद्ध नैतिक शक्ति का संबल लेकर भारतीय जनता अहिन्सात्मक संघर्ष कर रही थी।

निराला के सामने यह समस्या थी कि राम-रावण का युद्ध वर्णन करना है और उसके समानान्तर राम के भीतर चल रही है। लड़ाई वर्णन करना है, भीतर की लड़ाई यह है कि युद्ध लड़ा जाए या न लड़ा जाए। यदि लड़ा जाए तो कैसे ? लड़ने का साधन क्या हो। जीतेंगे इसमें भी संशय था, संकल्प की लड़ाई राम के भीतर चल रही है। राम द्वन्द्वातीत राम न होकर द्वन्द्व में फंसे राम हैं। राम-राम का द्वन्द्व राम-रावण के द्वन्द्व से महत्त्वपूर्ण हो गया है। निराला के राम आधुनिक मानव हैं जो न्याय के पक्षधर होते हुए भी टूटते हैं। संशय करते हैं यहाँ तक कि अपनी नियति को कोसते हैं-

धिक् जीवन जो पाता ही आया विरोध
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध।

निराला की सर्जनात्मकता प्रतिभा में ढ़लकर वाल्मीकि और तुलसी के राम आधुनिक स्वाधीनता संग्राम के संवेदनशील मानव के रूप में मूर्तिमान हो उठे। उनकी 'जानकी' मात्र 'प्रिया' नहीं स्वाधीनता की देवी हैं, जिसकी मुक्ति के लिए वे व्याकुल हैं। एक निर्बल देश को सबसे अधिक ताकत की आवश्यकता थी, शक्ति अर्जित करने की आवश्यकता थी।

दरअसल शक्ति की उपासना, उपासना मात्र न रह सकी। अंदर की शक्ति को जागृत करने की आवश्यकता रह गयी है। निराला के मन में शक्ति की अवधारणा थी। शक्ति की कल्पना मुक्त होने और कराने के लिए जा रही थी। निराला मानव

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

मुक्ति की कविता लिख रहे थे। जाम्बवान से परामर्श दिलाना भी कविता को नितान्त लौकिक धरातल पर लाना है। निराला रूपक के माध्यम से स्वाधीनता का एक चित्र प्रस्तुत करते हैं। रूपक की वास्तविकता और अप्रस्तुत की प्रतिध्वनि दोनों को निराला ने कलात्मक कौशल से साधा है।

युद्ध का वर्णन अधिक न होकर संकेत भर है। भीतर का वर्णन अधिक है। प्रसाद भी प्रलय वर्णन को छोङ देते है। संकल्प और विकल्प की जो लङाई राम के भीतर चल रही थी उसके परिहार के लिए निराला साधना की जरूरत समझते हैं। निराला का लक्ष्य यह था कि उस बिन्दु को प्राप्त किया जाए जहाँ संकल्प बिन्दु को प्राप्त किया जा सके। इसी बिन्दु पर आकर कविता समाप्त हो जाती है। विजय वर्णन में निराला की कोई रूचि नहीं है, उस संघर्ष को उभारकर रखना उनका उद्देश्य था जो उस समय भारतीय मानस की लङाई थी।

परिचय

लङाई 'कैसे लङा जाए' उस समय भारतीय जन-मानस की मूल समस्या थी। निराला दरअसल विजय का स्वाद जानते ही नहीं थे। इनका सारा का सारा काव्य संघर्ष का काव्य है।

प्रेरणा के रूप में तुलसीदास सर्वत्र विद्यमान है। यह कविता विलक्षण ढंग से ठेठ हिन्दी कविता है। अपनी छोटी-छोटी पंक्तियाँ में स्पंदन होने वाली कविता है। छंदो में रची गई है। शायद यह चेतना रही हो कि परम्परा में सभी काव्य छंद में है।[1]

राम की शक्ति पूजा (निराला) (प्रथम पृष्ठ)

रवि हुआ अस्त; ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम-रावण का अपराजेय समर
आज का तीक्ष्ण शर-विधृत-क्षिप्रकर, वेग-प्रखर,
शतशेलसम्वरणशील, नील नभगर्ज्जित-स्वर,
प्रतिपल – परिवर्तित – व्यूह – भेद कौशल समूह
राक्षस – विरुद्ध प्रत्यूह,-क्रुद्ध – कपि विषम हूह,
विच्छुरित वह्नि – राजीवनयन – हतलक्ष्य – बाण,
लोहितलोचन – रावण मदमोचन – महीयान,
राघव-लाघव – रावण – वारण – गत – युग्म – प्रहर,
उद्धत – लंकापति मर्दित – कपि – दल-बल – विस्तर,
अनिमेष – राम-विश्वजिद्दिव्य – शर – भंग – भाव,
विद्धांग-बद्ध – कोदण्ड – मुष्टि – खर – रुधिर – स्राव,
रावण – प्रहार – दुर्वार – विकल वानर – दल – बल,
मुर्छित – सुग्रीवांगद – भीषण – गवाक्ष – गय – नल,
वारित – सौमित्र – भल्लपति – अगणित – मल्ल – रोध,
गर्ज्जित – प्रलयाब्धि – क्षुब्ध हनुमत् – केवल प्रबोध,
उद्गीरित – वह्नि – भीम – पर्वत – कपि चतुःप्रहर,
जानकी – भीरू – उर – आशा भर – रावण सम्वर।
लौटे युग – दल – राक्षस – पदतल पृथ्वी टलमल,
बिंध महोल्लास से बार – बार आकाश विकल।
वानर वाहिनी खिन्न, लख निज – पति – चरणचिह्न
चल रही शिविर की ओर स्थविरदल ज्यों विभिन्न।
प्रशमित हैं वातावरण, नमित – मुख सान्ध्य कमल
लक्ष्मण चिन्तापल पीछे वानर वीर – सकल
रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा – मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार
चमकतीं दूर ताराएं ज्यों हों कहीं पार।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

आये सब शिविर,सानु पर पर्वत के, मन्थर
सुग्रीव, विभीषण, जाम्बवान आदिक वानर
सेनापति दल – विशेष के, अंगद, हनुमान
नल नील गवाक्ष, प्रात के रण का समाधान
करने के लिए, फेर वानर दल आश्रय स्थल।
बैठे रघु-कुल-मणि श्वेत शिला पर, निर्मल जल
ले आये कर – पद क्षालनार्थ पटु हनुमान
अन्य वीर सर के गये तीर सन्ध्या – विधान
वन्दना ईश की करने को, लौटे सत्वर,
सब घेर राम को बैठे आज्ञा को तत्पर,
पीछे लक्ष्मण, सामने विभीषण, भल्लधीर,
सुग्रीव, प्रान्त पर पाद-पद्म के महावीर,
यूथपति अन्य जो, यथास्थान हो निर्निमेष
देखते राम का जित-सरोज-मुख-श्याम-देश।
है अमानिशा, उगलता गगन घन अन्धकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन-चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल,
भूधर ज्यों ध्यानमग्न, केवल जलती मशाल।
स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर – फिर संशय
रह – रह उठता जग जीवन में रावण-जय-भय,
जो नहीं हुआ आज तक हृदय रिपु-दम्य-श्रान्त,
एक भी, अयुत-लक्ष में रहा जो दुराक्रान्त,
कल लड़ने को हो रहा विकल वह बार – बार,
असमर्थ मानता मन उद्यत हो हार-हार।
ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी तनया कुमारिका छवि अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का, -प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण,-
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन,-
काँपते हुए किसलय,-झरते पराग-समुदय,-
गाते खग-नव-जीवन-परिचय-तरू मलय-वलय,-
ज्योतिःप्रपात स्वर्गीय,-ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,-
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।
सिहरा तन, क्षण-भर भूला मन, लहरा समस्त,
हर धनुर्भंग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त,
फूटी स्मिति सीता ध्यान-लीन राम के अधर,
फिर विश्व-विजय-भावना हृदय में आयी भर,
वे आये याद दिव्य शर अगणित मन्त्रपूत,-
फड़का पर नभ को उड़े सकल ज्यों देवदूत,
देखते राम, जल रहे शलभ ज्यों रजनीचर,
ताड़का, सुबाहु, बिराध, शिरस्त्रय, दूषण, खर
राम की शक्ति पूजा (पृष्ठ 2)
फिर देखी भीम मूर्ति आज रण देखी जो
आच्छादित किये हुए सम्मुख समग्र नभ को,
ज्योतिर्मय अस्त्र सकल बुझ बुझ कर हुए क्षीण,

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

पा महानिलय उस तन में क्षण में हुए लीन;
लख शंकाकुल हो गये अतुल बल शेष शयन,
खिंच गये दृगों में सीता के राममय नयन;
फिर सुना हँस रहा अट्टहास रावण खलखल,
भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्तादल।
बैठे मारुति देखते राम-चरणारविन्द-
युग 'अस्ति-नास्ति' के एक रूप, गुण-गण-अनिन्द्य;
साधना-मध्य भी साम्य-वाम-कर दक्षिणपद,
दक्षिण-कर-तल पर वाम चरण, कपिवर गद् गद्
पा सत्य सच्चिदानन्द रूप, विश्राम – धाम,
जपते सभक्ति अजपा विभक्त हो राम – नाम।
युग चरणों पर आ पड़े अस्तु वे अश्रु युगल,
देखा कपि ने, चमके नभ में ज्यों तारादल;
ये नहीं चरण राम के, बने श्यामा के शुभ,-
सोहते मध्य में हीरक युग या दो कौस्तुभ;
टूटा वह तार ध्यान का, स्थिर मन हुआ विकल,
सन्दिग्ध भाव की उठी दृष्टि, देखा अविकल
बैठे वे वहीं कमल-लोचन, पर सजल नयन,
व्याकुल-व्याकुल कुछ चिर-प्रफुल्ल मुख निश्चेतन।
"ये अश्रु राम के" आते ही मन में विचार,
उद्वेल हो उठा शक्ति – खेल – सागर अपार,
हो श्वसित पवन – उनचास, पिता पक्ष से तुमुल
एकत्र वक्ष पर बहा वाष्प को उड़ा अतुल,
शत घूर्णावर्त, तरंग – भंग, उठते पहाड़,
जल राशि – राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़,
तोड़ता बन्ध-प्रतिसन्ध धरा हो स्फीत वक्ष
दिग्विजय-अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष,
शत-वायु-वेग-बल, डूबा अतल में देश – भाव,
जलराशि विपुल मथ मिला अनिल में महाराव
वज्रांग तेजघन बना पवन को, महाकाश
पहुँचा, एकादश रूद्र क्षुब्ध कर अट्टहास।
रावण – महिमा श्यामा विभावरी, अन्धकार,
यह रूद्र राम – पूजन – प्रताप तेजः प्रसार;
उस ओर शक्ति शिव की जो दशस्कन्ध-पूजित,
इस ओर रूद्र-वन्दन जो रघुनन्दन – कूजित,
करने को ग्रस्त समस्त व्योम कपि बढ़ा अटल,
लख महानाश शिव अचल, हुए क्षण-भर चंचल,
श्यामा के पद तल भार धरण हर मन्द्रस्वर
बोले- "सम्बरो, देवि, निज तेज, नहीं वानर
यह, -नहीं हुआ श्रृंगार-युग्म-गत, महावीर,
अर्चना राम की मूर्तिमान अक्षय – शरीर,
चिर – ब्रह्मचर्य – रत, ये एकादश रूद्र धन्य,
मर्यादा – पुरूषोत्तम के सर्वोत्तम, अनन्य,
लीलासहचर, दिव्यभावधर, इन पर प्रहार
करने पर होगी देवि, तुम्हारी विषम हार;

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

विद्या का ले आश्रय इस मन को दो प्रबोध,
झुक जायेगा कपि, निश्चय होगा दूर रोध।"
कह हुए मौन शिव, पतन तनय में भर विस्मय
सहसा नभ से अंजनारूप का हुआ उदय।
बोली माता "तुमने रवि को जब लिया निगल
तब नहीं बोध था तुम्हें, रहे बालक केवल,
यह वही भाव कर रहा तुम्हें व्याकुल रह रह।
यह लज्जा की है बात कि माँ रहती सह सह।
यह महाकाश, है जहाँ वास शिव का निर्मल,
पूजते जिन्हें श्रीराम उसे ग्रसने को चल
क्या नहीं कर रहे तुम अनर्थ? सोचो मन में,
क्या दी आज्ञा ऐसी कुछ श्री रघुनन्दन ने?
तुम सेवक हो, छोड़कर धर्म कर रहे कार्य,
क्या असम्भाव्य हो यह राघव के लिये धार्य?"
कपि हुए नम्र, क्षण में माता छवि हुई लीन,
उतरे धीरे धीरे गह प्रभुपद हुए दीन।
राम का विषण्णानन देखते हुए कुछ क्षण,
"हे सखा" विभीषण बोले "आज प्रसन्न वदन
वह नहीं देखकर जिसे समग्र वीर वानर
भल्लुक विगत-श्रम हो पाते जीवन निर्जर,
रघुवीर, तीर सब वही तूण में हैं रक्षित,
है वही वक्ष, रणकुशल हस्त, बल वही अमित,
हैं वही सुमित्रानन्दन मेघनादजित् रण,
हैं वही भल्लपति, वानरेन्द्र सुग्रीव प्रमन,
ताराकुमार भी वही महाबल श्वेत धीर,
अप्रतिभट वही एक अर्बुद सम महावीर
हैं वही दक्ष सेनानायक है वही समर,
फिर कैसे असमय हुआ उदय यह भाव प्रहर।
रघुकुलगौरव लघु हुए जा रहे तुम इस क्षण,
तुम फेर रहे हो पीठ, हो रहा हो जब जय रण।

राम की शक्ति पूजा / सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" / (पृष्ठ 3)
कितना श्रम हुआ व्यर्थ, आया जब मिलनसमय,
तुम खींच रहे हो हस्त जानकी से निर्दय!
रावण? रावण लम्पट, खल कल्मष गताचार,
जिसने हित कहते किया मुझे पादप्रहार,
बैठा उपवन में देगा दुख सीता को फिर,
कहता रण की जय-कथा पारिषद-दल से घिर,
सुनता वसन्त में उपवन में कल-कूजित पिक
मैं बना किन्तु लंकापति, धिक राघव, धिक्-धिक्?
सब सभा रही निस्तब्ध
राम के स्तिमित नयन
छोड़ते हुए शीतल प्रकाश देखते विमन,
जैसे ओजस्वी शब्दों का जो था प्रभाव
उससे न इन्हें कुछ चाव, न कोई दुराव,

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

ज्यों हों वे शब्दमात्र मैत्री की समनुरक्ति,
पर जहाँ गहन भाव के ग्रहण की नहीं शक्ति।
कुछ क्षण तक रहकर मौन सहज निज कोमल स्वर,
बोले रघुमणि-"मित्रवर, विजय होगी न समर,
यह नहीं रहा नर-वानर का राक्षस से रण,
उतरीं पा महाशक्ति रावण से आमन्त्रण,
अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति।" कहते छल छल
हो गये नयन, कुछ बूँद पुनः ढलके दृगजल,
रुक गया कण्ठ, चमका लक्ष्मण तेजः प्रचण्ड
धँस गया धरा में कपि गह युगपद, मसक दण्ड
स्थिर जाम्बवान, समझते हुए ज्यों सकल भाव,
व्याकुल सुग्रीव, हुआ उर में ज्यों विषम घाव,
निश्चित सा करते हुए विभीषण कार्यक्रम
मौन में रहा यों स्पन्दित वातावरण विषम।
निज सहज रूप में संयत हो जानकी-प्राण
बोले-"आया न समझ में यह दैवी विधान।
रावण, अधर्मरत भी, अपना, मैं हुआ अपर,
यह रहा, शक्ति का खेल समर, शंकर, शंकर!
करता मैं योजित बार-बार शर-निकर निशित,
हो सकती जिनसे यह संसृति सम्पूर्ण विजित,
जो तेजः पुंज, सृष्टि की रक्षा का विचार,
हैं जिसमें निहित पतन घातक संस्कृति अपार।
शत-शुद्धि-बोध, सूक्ष्मातिसूक्ष्म मन का विवेक,
जिनमें है क्षात्रधर्म का धृत पूर्णाभिषेक,
जो हुए प्रजापतियों से संयम से रक्षित,
वे शर हो गये आज रण में, श्रीहत खण्डित!
देखा हैं महाशक्ति रावण को लिये अंक,
लांछन को ले जैसे शशांक नभ में अशंक,
हत मन्त्रपूत शर सम्वृत करतीं बार-बार,
निष्फल होते लक्ष्य पर क्षिप्र वार पर वार।
विचलित लख कपिदल क्रुद्ध, युद्ध को मैं ज्यों ज्यों,
झक-झक झलकती वह्नि वामा के दृग त्यों-त्यों,
पश्चात्, देखने लगीं मुझे बँध गये हस्त,
फिर खिंचा न धनु, मुक्त ज्यों बँधा मैं, हुआ त्रस्त!"
कह हुए भानुकुलभूष्ण वहाँ मौन क्षण भर,
बोले विश्वस्त कण्ठ से जाम्बवान-"रघुवर,
विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण,
हे पुरुषसिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण,
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर,
तुम वरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर।
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सकता त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त,
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन।
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनन्दन!
तब तक लक्ष्मण हैं महावाहिनी के नायक,
मध्य भाग में अंगद, दक्षिण-श्वेत सहायक।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

मैं, भल्ल सैन्य, हैं वाम पार्श्व में हनुमान,
नल, नील और छोटे कपिगण, उनके प्रधान।
सुग्रीव, विभीषण, अन्य यथुपति यथासमय
आयेंगे रक्षा हेतु जहाँ भी होगा भय।"
खिल गयी सभा। "उत्तम निश्चय यह, भल्लनाथ!"
कह दिया वृद्ध को मान राम ने झुका माथ।
हो गये ध्यान में लीन पुनः करते विचार,
देखते सकल-तन पुलकित होता बार-बार।
कुछ समय अनन्तर इन्दीवर निन्दित लोचन
खुल गये, रहा निष्पलक भाव में मज्जित मन,
बोले आवेग रहित स्वर सें विश्वास स्थित
"मातः, दशभुजा, विश्वज्योति; मैं हूँ आश्रित;
हो विद्ध शक्ति से है खल महिषासुर मर्दित;
जनरंजन-चरण-कमल-तल, धन्य सिंह गर्जित!
यह, यह मेरा प्रतीक मातः समझा इंगित,
मैं सिंह, इसी भाव से करूँगा अभिनन्दित।"
राम की शक्ति पूजा पृष्ठ(4)
कुछ समय तक स्तब्ध हो रहे राम छवि में निमग्न,
फिर खोले पलक कमल ज्योतिर्दल ध्यान-लग्न।
हैं देख रहे मन्त्री, सेनापति, वीरासन
बैठे उमड़ते हुए, राघव का स्मित आनन।
बोले भावस्थ चन्द्रमुख निन्दित रामचन्द्र,
प्राणों में पावन कम्पन भर स्वर मेघमन्द्र,
"देखो, बन्धुवर, सामने स्थिर जो वह भूधर
शोभित शत-हरित-गुल्म-तृण से श्यामल सुन्दर,
पार्वती कल्पना हैं इसकी मकरन्द विन्दु,
गरजता चरण प्रान्त पर सिंह वह, नहीं सिन्धु।
दशदिक समस्त हैं हस्त, और देखो ऊपर,
अम्बर में हुए दिगम्बर अर्चित शशि-शेखर,
लख महाभाव मंगल पदतल धँस रहा गर्व,
मानव के मन का असुर मन्द हो रहा खर्व।"
फिर मधुर दृष्टि से प्रिय कपि को खींचते हुए
बोले प्रियतर स्वर सें अन्तर सींचते हुए,
"चाहिए हमें एक सौ आठ, कपि, इन्दीवर,
कम से कम, अधिक और हों, अधिक और सुन्दर,
जाओ देवीदह, उषःकाल होते सत्वर
तोड़ो, लाओ वे कमल, लौटकर लड़ो समर।"
अवगत हो जाम्बवान से पथ, दूरत्व, स्थान,
प्रभुपद रज सिर धर चले हर्ष भर हनुमान।
राघव ने विदा किया सबको जानकर समय,
सब चले सदय राम की सोचते हुए विजय।
निशि हुई विगतः नभ के ललाट पर प्रथम किरण
फूटी रघुनन्दन के दृग महिमा ज्योति हिरण।
हैं नहीं शरासन आज हस्त तूणीर स्कन्ध
वह नहीं सोहता निविड़-जटा-दृढ़-मुकुट-बन्ध,
सुन पड़ता सिंहनाद,-रण कोलाहल अपार,

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

उमड़ता नहीं मन, स्तब्ध सुधी हैं ध्यान धार,
पूजोपरान्त जपते दुर्गा, दशभुजा नाम,
मन करते हुए मनन नामों के गुणग्राम,
बीता वह दिवस, हुआ मन स्थिर इष्ट के चरण
गहन-से-गहनतर होने लगा समाराधन।
क्रम-क्रम से हुए पार राघव के पंच दिवस,
चक्र से चक्र मन बढ़ता गया ऊर्ध्व निरलस,
कर-जप पूरा कर एक चढाते इन्दीवर,
निज पुरश्चरण इस भाँति रहे हैं पूरा कर।
चढ़ षष्ठ दिवस आज्ञा पर हुआ समाहित-मन,
प्रतिजप से खिंच-खिंच होने लगा महाकर्षण,
संचित त्रिकुटी पर ध्यान द्विदल देवी-पद पर,
जप के स्वर लगा काँपने थर-थर-थर अम्बर।
दो दिन निःस्पन्द एक आसन पर रहे राम,
अर्पित करते इन्दीवर जपते हुए नाम।
आठवाँ दिवस मन ध्यान-युक्त चढ़ता ऊपर
कर गया अतिक्रम ब्रह्मा-हरि-शंकर का स्तर,
हो गया विजित ब्रह्माण्ड पूर्ण, देवता स्तब्ध,
हो गये दग्ध जीवन के तप के समारब्ध।
रह गया एक इन्दीवर, मन देखता पार
प्रायः करने हुआ दुर्ग जो सहस्रार,
द्विप्रहर, रात्रि, साकार हुई दुर्गा छिपकर
हँस उठा ले गई पूजा का प्रिय इन्दीवर।
यह अन्तिम जप, ध्यान में देखते चरण युगल
राम ने बढ़ाया कर लेने को नीलकमल।
कुछ लगा न हाथ, हुआ सहसा स्थिर मन चंचल,
ध्यान की भूमि से उतरे, खोले पलक विमल।
देखा, वह रिक्त स्थान, यह जप का पूर्ण समय,
आसन छोड़ना असिद्धि, भर गये नयनद्वय,
"धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध
जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका,
वह एक और मन रहा राम का जो न थका,
जो नहीं जानता दैन्य, नहीं जानता विनय,
कर गया भेद वह मायावरण प्राप्त कर जय,
बुद्धि के दुर्ग पहुँचा विद्युतगति हतचेतन
राम में जगी स्मृति हुए सजग पा भाव प्रमन।
"यह है उपाय", कह उठे राम ज्यों मन्द्रित घन-
"कहती थीं माता मुझे सदा राजीवनयन।
दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन।"
राम की शक्ति पूजा पृष्ठ (5)
कहकर देखा तूणीर ब्रह्मशर रहा झलक,
ले लिया हस्त, लक-लक करता वह महाफलक।
ले अस्त्र वाम पर, दक्षिण कर दक्षिण लोचन
ले अर्पित करने को उद्यत हो गये सुमन

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

जिस क्षण बँध गया बेधने को दृग दृढ़ निश्चय,
काँपा ब्रह्माण्ड, हुआ देवी का त्वरित उदय-
"साधु, साधु, साधक धीर, धर्म-धन धन्य राम!"
कह, लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम।
देखा राम ने, सामने श्री दुर्गा, भास्वर
वामपद असुर-स्कन्ध पर, रहा दक्षिण हरि पर।
ज्योतिर्मय रूप, हस्त दश विविध अस्त्र सज्जित,
मन्द स्मित मुख, लख हुई विश्व की श्री लज्जित।
हैं दक्षिण में लक्ष्मी, सरस्वती वाम भाग,
दक्षिण गणेश, कार्तिक बायें रणरंग राग,
मस्तक पर शंकर! पदपद्मों पर श्रद्धाभर
श्री राघव हुए प्रणत मन्द स्वर वन्दन कर।
"होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन।"
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।

विचार-विमर्श

"राम की शक्तिपूजा" पर जो आलोचनात्मक विमर्श अब तक हुआ है उसमें अधिकतर इस कविता के रूप-पक्ष पर पारंपरिक दृष्टि से विचार किया गया है। रस, अलंकार, काव्यभाषा, काव्य-रूप आदि की चर्चा की गयी है या फिर कृत्तिवास, वाल्मीकि या भास और तुलसीदास आदि की रामकथा पर आधारित कृतियों से " राम की शक्तिपूजा" की तुलना की गई है। डॉ0 दूधनाथ सिंह ने इस तरह की अकादमिक आलोचना पद्धति से अलग हट कर " राम की शक्तिपूजा" को विश्लेषित करने का संकल्प लिया तो एक दूसरी गलती का शिकार हो गये और उसे कवि की अपनी निजी दुनिया से जोड़ दिया। " राम की शक्तिपूजा" जैसी नाटकीय कविता को कवि के अपने ही जीवन से जोड़ना और इस तरह उसे एक तरह से " लिरिकल" कविता (जिसे आलोचना की दुनिया में दोयम दर्जे की कविता माना जाता है) बना देना निराला के साथ अन्याय करना होगा। दूधनाथ सिंह लिखते हैं : "दरअसल मुझे बराबर लगता है कि निराला ने राम के संशय, उनकी खिन्नता, उनके संघर्ष और अंततः उनके द्वारा शक्ति की मौलिक कल्पना और साधना तथा अंतिम विजय में अपने ही रचनात्मक जीवन और व्यक्तिगतता के संशय, अपनी रचनाओं के निरंतर विरोध से उत्पन्न आंतरिक खिन्नता, फिर अपने संघर्ष, अपनी प्रतिभा के अभ्यास, अध्ययन और कल्पना-ऊर्जा द्वारा एक नयी शक्ति के रूप में उपलब्ध और प्रदर्शित करके अंततः रचनात्मकता की विजय का घोष ही इस कविता में व्यक्त किया है। वही स्वयं "पुरुषोत्तम नवीन" हैं।" [2]

निराला ही नहीं, किसी भी कवि की संश्लिष्ट और महान रचना उसके जीवन की प्रतीक कथा या उत्था नहीं होती, यह सत्य मनोविश्लेषणशास्त्र के तमाम शोधों से प्रमाणित हो चुका है। मगर हिंदी के आलोचक अभी तक इस गलत आलोचनात्मक पद्धति से अपना पीछा नहीं छुड़ा पा रहे हैं। फ्रांसीसी चिंतक रोलां बार्थ ने 1964 में छपी अपनी पुस्तक **"आलोचनात्मक निबंध"** में ठीक ही कहा था कि "यह आलोचनात्मक पद्धति फ्रांस की प्राध्यापकीय आलोचना में ही नहीं, विश्व के दूसरे देशों में भी अभी तक मौजूद है।" हमारी हिंदी आलोचना में तो यह पद्धति बुरी तरह घर किये हुए है। हिंदी आलोचना के विकास के लिए यह ज़रुरी है कि कवि के जीवन से उसकी कविता को जोड़ देने की अवैज्ञानिक पद्धति से छुटकारा पाया जाये।

किसी भी कविता को एक वस्तुगत कृति के रूप में उसके देश, काल, समाज और उस विधा के अपने स्वायत्त विकास तथा सौंदर्यशास्त्रीय योगदान के संदर्भो में ही व्याख्यायित किया जाये, उसमें कवि की निजी जिंदगी ढूंढ़ निकालने और उसके हर मोड़ और रचनात्मक कोण को उसके "निजत्व" में सीमित कर देने की कोशिश से बचने की शुरुआत की जाये।

इस इकाई में हमने उपर्युक्त सीमाओं से अलग हटकर "राम की शक्तिपूजा" के एक वस्तुगत विश्लेषण का प्रयास किया है। किसी भी कृति को उसके युग से, युग के वैचारिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक दबावों से हट के नहीं समझा जा सकता। इसलिए "राम की शक्तिपूजा" को उसके ऐतिहासिक संदर्भ में रखकर हमने सर्वप्रथम कविता के संवेदनात्मक उद्देश्य की पड़ताल की है। तदुपरांत हमने कविता के पाठावलोकन की प्रक्रिया से गुज़रते हुए "राम की शक्तिपूजा" की बहुस्तरीय अर्थपरतों को खोलने का प्रयास किया है। इसके बाद इस कविता के काव्यरूप के प्रश्न पर भी हमने विचार किया है।

अक्सर इस कविता को "महाकाव्य", "खण्डकाव्य", **"लम्बी कविता"** कह दिया जाता है। ऐसा कहने का आधार क्या है ? और वास्तव में काव्यरूप की दृष्टि से यह कविता क्या है ? मिथकीय ढाँचे में बंधी इस कविता के काव्यरूप की दृष्टि से प्रयोगात्मक पहलू पर भी इस इकाई में हमने विचार किया है। अंत में कविता के संरचनात्मक सौंदर्य पर भी विचार किया गया है। तो आइये "राम की शक्तिपूजा" के ऐतिहासिक संदर्भ को समझने से शुरुआत करें।

निराला के युग में भारतीय समाज की संरचना का सारतत्व क्या है ? उन्नीसवीं सदी के अंत में भारत में दो नये वर्गों का उदय हुआ था, ये नये वर्ग थे : औद्योगिक पूँजीपति और उनके तहत काम करने वाला मजदूरवर्ग। देश पर राज्य करने वाले ब्रिटिश पूंजीपति पूरे भारतीय

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

समाज का शोषण कर रहे थे, इसलिए भारतीय समाज का टकराव ब्रिटिश पूंजीपति वर्ग और उनकी राजसत्ता से होना ही था। निराला के समय में भारतीय समाज और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के बीच का युद्ध और अधिक तीव्र होता जा रहा था। इस दौर में इस युद्ध में भारतीय समाज का नेतृत्व यहाँ का उदीयमान पूंजीपति वर्ग कर रहा था क्योंकि यह ऐतिहासिक जिम्मेदारी कई कारणों से इसी वर्ग के कंधों पर आ गई थी, इसे अपने विकास के लिए यहाँ का बाज़ार मुक्त कराना था जो कि उस समय तक ब्रिटिश पूंजीपतियों के हाथों में था।

कांग्रेस पार्टी भारतीय पूंजीपतिवर्ग की ही हितसाधक पार्टी थी, किंतु स्वाधीनता की लड़ाई में विजय हासिल करने के लिए पूरे भारतीय समाज की एकता ज़रूरी थी, इसलिए पूंजीपति नेतृत्व के लिए यह ज़रूरी था, वह पूरे राष्ट्र की मुक्ति की बात करे और सभी के हितों का प्रतिनिधित्व करने का दावा करे| "राम की शक्तिपूजा" जिस दौर में लिखी गयी थी, उस दौर में पूंजीपतिवर्ग के साथ ही यहाँ का मजदूरवर्ग भी राजनीति में कूद चुका था, उस वर्ग ने भी अपनी राजनीतिक पार्टी जो कि हर देश में कम्युनिस्ट पार्टी के रूप में वजूद में आती ही है, भारत में बना ली थी और वह भी भारत के तमाम शोषित जनों को साम्राज्यवाद से मुक्त कराने के लिए संघर्षरत था।

हिंदी साहित्य ही नहीं, अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य भी इन दो उदीयमान नये वर्गों यानी भारतीय पूंजीपति वर्ग और मजदूर वर्ग की विचारधाराओं से और उनके संघर्षों से प्रेरित हो रहा था। हमारे यहाँ भी गौर से देखें तो भारतेंदु हरिश्चन्द्र से लेकर मैथिलीशरण गुप्त और निराला, पंत, प्रसाद, महादेवी वर्मा आदि और फिर प्रगतिवादी साहित्य को इन्हीं वर्गों के विचारों की अनुगूंज से भरा हुआ पायेंगे। "राम की शक्तिपूजा" को इस ऐतिहासिक संदर्भ से काटकर विश्लेषित करना कतई सही नहीं होगा।

निराला ने तमाम मिथकीय प्रतीकों को चाहे वह "सरस्वती" का हो या "दुर्गा" का हो या " राम" का हो मातृभूमि की गुलामी से मुक्ति के संवेदनात्मक उद्देश्य से ही अपनी कविताओं में प्रयुक्त किया है। यदि वे मिथकीय प्रयोग सिर्फ मिथकों को ही व्याख्यायित करने के लिए करते या सिर्फ अपनी मनोगत चिंताओं और निजी दुखों या भावनाओं को व्यक्त करने के लिए करते तो ये कविताएं स्थायी महत्व की हो भी नहीं सकती थीं।[3]

"राम की शक्तिपूजा" का संवेदनात्मक उद्देश्य जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, रचना के देश और काल तथा समाज के संदर्भ में ही खोजा जा सकता है और इस प्रक्रिया में ही उसका एक नया आलोचनात्मक विमर्श भी तैयार होता है। रचना का अभिधात्मक पाठ यह बताता है कि राम और रावण के बीच एक समर चल रहा है, इस समर में राम को लगता है "मित्रवर, विजय होगी न समर" । इसकी वजह क्या है? इसकी वजह यह है कि शक्ति-संतुलन रावण के पक्ष में है, "अन्याय जिधर, है उधर शक्ति।" कविता यह भी संकेत देती है कि यह समर किसके लिए लड़ा जा रहा है, "जानकी ! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका !" यह लड़ाई प्रिया की मुक्ति की लड़ाई है। इस लड़ाई में "विजय" तब तक संभव नहीं जब तक शक्ति-संतुलन रावण के पक्ष में है। "अन्याय" को तब तक परास्त नहीं किया जा सकता जब तक शक्ति-संतुलन न्याय के पक्ष में न हो जाये। यह सामरिक रणनीति का सार्वभौमिक सत्य है। यह कविता अपने देश और काल के संदर्भ में भारत की मुक्ति की लड़ाई से जुड़ जाती है क्योंकि इसमें जिस शक्ति की प्रतीकात्मक पूजा है, वह अपने स्वरूप में भारतमाता की छवि है, असल में वह प्रतीकात्मक रूप में भारत की जनशक्ति है जिसे न्याय के पक्ष में होना है। संपूर्ण भारत की जनशक्ति यदि ब्रिटिश साम्राज्यवाद रूपी रावण के विरुद्ध खड़ी हो जाती है, तो उसी क्षण "विजय" की आशा बलवती हो जाती। इस तरह "राम की शक्तिपूजा" भारतभूमि की मुक्ति की लड़ाई की एक फैंटेसी है, जिसमें जनशक्ति की प्रमुख भूमिका को रेखांकित किया गया है।

राम की शक्तिपूजा' में देश, काल और अपने समाज का संदर्भ तो है ही, उसमें एक सार्वभौमिक सत्य भी छिपा है। हर बड़ी रचना के पीछे एक सार्वभौमिक सत्य भी होता है जो उसे अपने देश और काल से अतिक्रमित करा के बार-बार प्रासंगिक बनाता है। यह कविता इस मिथ्या चेतना को तोड़ती है कि कोई अवतारी देवता हमें मुक्ति दिलाता है, 'संभवामि युगे युगे' का उद्घोष एक झूठ है, सच्चाई यह है कि शोषित जनशक्ति ही संगठित हो कर अन्याय पर आधारित समाज व्यवस्था से मुक्ति दिलाती है और उसकी एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है।

समाज के विकास में यह प्रक्रिया घटित होती है। जब शक्ति संतुलन अन्यायपूर्ण व्यवस्था के पक्ष में होता है तो अन्याय की विजय होती रहती है और जब यह शक्तिसंतुलन न्याय की शक्तियों के पक्ष में होता है तो अन्याय से मुक्ति मिल जाती है। योरप में फ्रांस की क्रांति (1789) के वक्त यह सार्वभौमिक सत्य सामने आ गया था। उस समय योरप में सामंतवाद एक अन्यायपूर्ण व्यवस्था बनाये रखने वाला शासकवर्ग था, उभरते हुए पूंजीवाद समेत बाकी सभी वर्ग उसके अधीन रह कर समाज को आगे विकसित नहीं कर सकते थे, इसलिए उस अन्यायपूर्ण सामंती व्यवस्था के खिलाफ पूंजीवाद के नेतृत्व में समाज के अन्य सभी शोषित एकजुट हो गये और 'समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व' के नये मानवीय मूल्यों के उद्घोष के साथ अन्यायपूर्ण व्यवस्था को खत्म कर दिया, मगर पूंजीवाद ने शासक बन कर इन मानवीय मूल्यों का फिर ध्वंस करना शुरू कर दिया, इसलिए इससे भी मुक्ति के प्रयास शुरू हुए।

पेरिस कम्यून के ऐतिहासिक संघर्ष को इस प्रयास का ही एक रूप माना जाता है। पूंजीवाद से मुक्ति की ऐतिहासिक जिम्मेदारी मज़दूरवर्ग पर है क्योंकि सीधेसीधे पूंजीवादी शोषण का एहसास उसी को है। इसीलिए उसने अपने मुक्ति के प्रयासों के दौरान सबसे अधिक क्रांतिकारी विचारधारा और वैज्ञानिक दर्शन- मार्क्सवाद को जन्म दिया। यह दर्शन ही यह बताता है कि मात्रात्मक परिवर्तन एक स्तर पर पहुँचकर गुणात्मक परिवर्तन बन जाता है। समाज व्यवस्थाएं भी इसी प्रक्रिया से परिवर्तित होती हैं।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

हमारी आज़ादी की लड़ाई में भी यही प्रक्रिया घटित हो रही थी। ब्रिटिश शासक रूपी रावण के पक्ष में बहुत समय तक भारत की जनशक्ति रही, किंतु धीरेधीरे भारतीय पूंजीपति के उदय के साथ यह जनशक्ति 'राष्ट्रवाद' की नयी विचारधारा के प्रभाव में आकर 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' की चेतना तक पहुँची। जैसे-जैसे जनशक्ति के बड़े हिस्से इस संघर्ष के साथ जुड़ते गये मुक्तिसंग्राम में विजय की आशा भी बलवती होती गयी।

'राम की शक्तिपूजा' इसी सार्वभौमिक सत्य को एक मिथकीय आख्यान के माध्यम से अभिव्यक्त करती है। इस सार्वभौमिक सत्य को रूस की क्रांति, चीनी क्रांति, वियतनाम की क्रांति आदि में भी देखा जा सकता है कि जब जनशक्ति नेतृत्व के साथ हो कर नया संतुलन बना देती है तो समर में विजय अवश्य होती है। जब तक यह जनशक्ति अन्याय की ताकतों का साथ भ्रमवश देती रहती है, मुक्तिकामी वर्गों का साथ नहीं देती, तब तक मुक्ति की ताकतों को शिकस्त मिलती है, तब तक 'रह रह उठता जग जीवन में रावण-जय-भय।

"राम की शक्तिपूजा" का पाठालोकन कई तरह के भाष्यों की गुंजाइश देता है। इसकी वजह यह है कि यह कविता अपनी संरचना में काफी संश्लिष्ट है, उसमें कविता के अनेक स्तरीय उपादानों का कलात्मक प्रयोग किया गया है। उसे मिथ, प्रतीक, बिंब, छंद, अलंकार और ध्वन्यात्मकता आदि उपकरणों से सजाया गया है और मुक्तिकामी विचारधारा की आँच से प्राणवान बनाया गया है। इस कविता के सार्थक आलोचनात्मक विमर्श के लिए इसके दो केंद्रीय बिंबों पर ध्यान देना ज़रूरी है। ये बिंब हैं, "ज्योति" और "नयन" | कविता की शुरुआत "रवि हुआ अस्त/ज्योति के पत्र" से होती है और फिर इस "ज्योति के पत्र" पर लिखे "आज" के समर का वर्णन होता है जिसके केंद्र में "विच्छरित – वहिन – राजीवनयन" एक ओर हैं, तो दूसरी ओर "लोहित लोचन रावण" है। राम की आँखों में अग्नि है, रावण की आंखों में लहू। एक दिन के इस युद्ध-वर्णन के बाद शाम गहराती है, "उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशांधकार/चमकती दूर ताराएं ज्यों हों कहीं पार'[4]

यह नैशांधकार भी ज्योति के अभाव का ही दूसरा रूप है। इस अंधकार में दूर कहीं ताराएं चमक रही हैं। ज्योति पूरी तरह नदारद नहीं है, आशा की किरण समाप्त नहीं है। इसी तरह इस मुक्तिसंग्राम में तात्कालिक सफलता न मिलने की मनोदशा का चित्रण भी बिंबों के माध्यम से किया गया है। चारों ओर अंधेरा है, मगर कहीं न कहीं आशा की ज्योति भी जल रही है :

है अमा निशा, उगलता गगन घन अंधकार।
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार।
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अंबुधि विशाल,
भूधर ज्यों ध्यानमग्न, केवल जलती मशाल

विश्व साहित्य में प्रकाश को ज्ञान के लिए प्रयुक्त किया गया है। "तमसो मा ज्योतिर्गमय' की प्रार्थना के समय से हमारे यहाँ भी प्रकाश को इसी अर्थ में लिया जाता रहा है। इस कविता में प्रकाश के बिंब में मात्रात्मक परिवर्तन भी एक अर्थ ध्वनित करता चलता है। "नैशांधकार" में "चमकती दूर ताराएं" प्रकाश की झीनी किरण हैं, ये शायद मुक्ति की आशा लगाये सीता की आंखें हैं, लेकिन मात्रात्मक रूप में अंधकार ज्यादा है, इसी तरह " गगन घन अंधकार" में "केवल जलती मशाल" भी मात्रात्मक रूप में बहुत बड़ी ज्योति नहीं है। अंधकार और प्रकाश के इस युद्ध में प्रकाश कमज़ोर ज़रूर है। अपनी प्रिया की मुक्ति का विचार ही वह प्रेरक प्रकाश है जो मन को दीप्त करता है :

ऐसे क्षण अंधकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत

प्रकाश के इस बिंब के साथ ही "नयन" का यानी दृष्टि का बिंब भी आ जाता है। प्रकाश हो भी और यदि "नयन" न हों तो प्रकाश का अस्तित्व सार्थक नहीं हो सकता। यह सत्य है कि मुक्ति के संघर्ष में ज्ञान होते हुए भी यदि दृष्टि नहीं तो सारा संघर्ष निष्फल हो जाता है। इतिहास में इसके उदाहरण मौजूद हैं। इसलिए मुक्ति के समर में जीत हासिल करने के लिए वैज्ञानिक और तर्कसंगत देश और काल सापेक्ष दृष्टि की अहम भूमिका होती है। मुक्ति समर की इस कविता में इसीलिए इन दोनों बिंबों यानी "प्रकाश" और "नयन" का विशेष महत्व है।

दृष्टि अर्जित करने के लिए अतीत का विश्लेषण अक्सर किया जाता है। इस कविता में भी वर्तमान से अतीत की ओर और अतीत से वर्तमान की ओर बार-बार लौटा जाता है, तब अंत में भविष्य की रूपरेखा तय होती है। प्रारंभ निकट अतीत "आज" का समर के विश्लेषण से ही होता है, उसके बाद वर्तमान क्षण के अंधकार और उसमें झीने प्रकाश का चित्रण होता है, और फिर अतीत की ओर लौटने की प्रक्रिया शुरू होती है: "याद आया उपवन/विदेह का" इस अतीत में "नयनों का नयनों से गोपन" भी याद आता है और इस अतीत में ही "ज्योतिःप्रपात स्वर्गीय-ज्ञात छवि प्रथम स्वीय/जानकी नयन कमनीय" की स्मृति भी आती है। इस सुदूर अतीत में दिखायी दे रहे "जानकी नयन" राम को वर्तमान तक ले आते हैं, आज का रण सामने आ जाता है, जिसमें वे देखते हैं कि भीमाकार शक्ति रावण के पक्ष में युद्ध भूमि को आच्छादित किये हुए है और उसको सुरक्षा प्रदान कर रही है :

फिर देखी भीमा मूर्ति, आज रण देखी जो
आच्छादित किये हुए सम्मुख समग्र नभ को

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

ज्योतिर्मय अस्त्रसकल बुझ बुझकर हुए क्षीण
पा महानिलय उस तन में क्षण में हुए लीन

इस परिस्थिति में रावण पर विजय पाना आसान नहीं, शक्ति संतुलन उसके पक्ष में है। इस शंकाकुल स्थिति में "खिंच गये दृगों में सीता के राममय नयन।" और फिर "भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्ता दल!" हनुमान ने उन नयनों को देखा, "देखा कपि ने, चमके नभ में ज्यों तारा दल" | "बैठे वे वही कमल लोचन, पर सजल नयन/व्याकुल व्याकुल कुछ चिर प्रफुल्ल मुख निश्चेतन।" राम की ऐसी व्याकुल स्थिति देख कर हनुमान पंचतत्वों को समन्वित करके उस महाशक्ति से टक्कर लेने के लिए महाकाश में पहुँचते हैं जो रावण को सुरक्षा प्रदान किये हुए है :

तोड़ता बंध – प्रतिसंध धरा...
शत वायु वेग बल, डुबा अतल में देश भाव ।
जल राशि विपुल मथ मिला अनिल में महाराव
वज्रांग तेजघन बना पवन को, महाकाश
पहुँचा, एकादश रुद्र क्षुब्ध कर अट्टहास।

यहाँ "धरा", "वायु", "जल", "तेज" और "आकाश" पंचतत्व हैं, इन्हें समन्वित करके बलशाली बना कपि उस समस्त आकाश को ही निगलने के लिए आगे बढ़ा, जिसमें रावण की पक्षधर शक्ति छायी हुई है, "करने को ग्रस्त समस्त व्योम कपि बढ़ा अटल।"[5] रावण की पक्षधर शक्ति को "श्यामा विभावरी, अंधकार" कहा गया है, जाहिर है कि अज्ञान के अंधकार में डूबी जनशक्ति ही अन्याय का जाने अनजाने पक्ष लेती है। जर्मनी में हिटलर हो या पूँजीवादी देशों में लोकतंत्र की आड़ में शोषकों का वर्चस्व हो इसी जनशक्ति के पक्ष लेने के कारण सत्ता में रहते हैं। न्याय के पक्ष को जिसका प्रतिनिधित्व इस कविता में राम करते हैं हारते हुए देखकर जो कपि विचलित हो रहा है उसे "रुद्र राम पूजन प्रताप तेजःप्रसार" कहा गया है जो कि ज्योति का ही एक रूप है। पंचतत्वों पर विजय विज्ञान कर रहा है और यह विज्ञान भी समर में काम आ रहा है। आज तो विज्ञान का दुरुपयोग संपूर्ण पृथ्वी का संहार कर सकता है, निराला के समय में भी इस विज्ञान की युद्ध सामग्री का जनविनाशकारी रूप कुछ हद तक सामने आ चुका था। भारत की मुक्ति की लड़ाई में इस जनविनाशकारी रास्ते को वरेण्य नहीं माना गया था। इसीलिए शिव अपनी दुर्गा को अंजनीरूप धारण करने को कहते हैं और बताते हैं कि "विद्या का ले आश्रय इस मन को दो प्रबोध।" अंजनीरूपा शक्ति हनुमान को डांटती है और पूछती है कि "क्या दी आज्ञा ऐसी कुछ श्री रघुनंदन ने ?" नेतृत्व से अलग हट कर मनमाने तरीके से किया जाने वाला दुस्साहस किसी भी रण में नुकसानदेह होता है। संघर्ष सामूहिक समझ से लड़कर ही जीता जा सकता है, एक-एक व्यक्ति के अपने-अपने निर्णय से नहीं। हनुमान के पुनः सामान्य होने पर सामूहिक समझ बनाने की प्रक्रिया शुरू होती है। राम के उदास मुंह को देखकर विभीषण अपनी बात कहते हैं और राम को उकसाते हैं। राम पर उनके शब्दों का कोई असर नहीं होता। "सब सभा रही निस्तब्ध, राम के स्तिमित नयन" | फिर राम बताते हैं कि :

यह नहीं रहा नर वानर का राक्षस से रण
उतरीं पा महाशक्ति रावण से आमंत्रण।
अन्याय जिधर है उधर शक्ति।
कहते छल-छल हो गये नयन,
कुछ बूंद पुनः ढलके दृग जल।

निराला बा-बार "नयन" का बिंब लाते हैं। राम के नयन में दृगजल झलक रहा है। वे बताते हैं कि सत्य और न्याय का पक्ष लेने पर भी वे शक्ति के लिए पराये हो गये और अधर्मरत रावण को वह शक्ति अपने अंक में लिये हुए है :

देखा, है महाशक्ति रावण को लिये अंक
लांक्षन को ले जैसे शशांक नभ में अशंक
विचलित लख कपिदल क्रुद्ध युद्ध को मैं ज्यों ज्यों
झक झक झलकती वह्नि वामा के दृग त्यों त्यों

वामा के नयनों में आग जलती दिखायी दे रही हो, तो राम का " त्रस्त" होना स्वाभाविक ही है। राम शक्ति के इस खेल का रहस्योद्घाटन अपनी सेना के सामने कर देते हैं। जाम्बवान राम को इसका उपाय सुझाते हैं :

विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण
हे पुरुषसिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण
शक्ति की करो मौलिक कल्पना, करो पूजन
छोड़ दो समर जब तक न सिद्धि हो, रघुनंदन।

"शक्ति की. मौलिक कल्पना" में ही इस कविता का प्रतीकार्थ खुलता है। यह परंपरागत दुर्गा या पार्वती या काली की पूजा का आख्यान नहीं है। यह कविता अपने प्रतीकार्थ में भारत के स्वाधीनता संग्राम की रणनीति की कविता है। यह पूजा उस जनशक्ति को

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

अपने पक्ष में करने का उद्यम है जिसको साथ लिये बगैर कोई भी मुक्तिकामी नेतृत्व लड़ाई जीत नहीं सकता। फ्रांस की पूंजीवादी क्रांति हो, या रूस की अक्टूबर क्रांति या चीन और वियतनाम के मुक्तिसंग्राम या भारत की आज़ादी की लड़ाई हो इनमें विजय उसी बिंदु पर संभव हुई जब वर्गों का संतुलन मुक्ति की ताकतों के पक्ष में हो गया। कोई एक व्यक्ति चाहे वह अवतारी पुरुष ही क्यों न हो अकेले या जनशक्ति को अपने पक्ष में किये बगैर सत्ता हासिल नहीं कर सकता है। इसीलिए शोषक वर्गों के नेता और उनके दल भी अविद्या फैलाकर या झूठे वायदे करके इसी जनशक्ति को भरमाये रहते हैं और अपने पक्ष में किये रहते हैं और इस तरह सत्ता पर कब्जा किये रहते हैं।

भारत और विश्व के अन्य तमाम पूंजीवादी देशों में पूंजीपतियों की पार्टियां अन्य तमाम वर्गों को इसी तरह अविद्या और अज्ञान के मायाजाल में फंसा कर और झूठे वायदे करके सत्ता में बनी रहती हैं और जब जनता एक पार्टी के झूठ को जान जाती है तो पूंजीपतियों की ही दूसरी पार्टी उसी जनशक्ति के समर्थन से सत्ता में आ जाती है और इस तरह शोषण का क्रम इन देशों में चलता रहता है। इस शोषण से मुक्ति सिर्फ सर्वहारावर्ग ही दिला सकता है किंतु समाज की पूरी शोषित जनशक्ति जब तक उसका साथ नहीं देती, तब तक शोषण पर आधारित समाज की मुक्ति भी शोषण व्यवस्था से नहीं हो पाती। "शक्ति की मौलिक कल्पना" का यही अर्थ है कि मुक्तिकामी नेतृत्व को भारत की जनशक्ति की आराधना करके उसे अपने पक्ष में करना होगा। प्रतीकात्मक स्तर पर " राम की शक्तिपूजा" में यही प्रक्रिया घटित की जाती है।[6] राम इस रणनीतिक समझ को वृद्ध जाम्बवान से हासिल करते हैं तो निराशा दूर होती है और उनके नेत्र खुल जाते हैं :

कुछ समय अनंतर इंदीवर निंदित लोचन
खुल गये, रहा निष्पलक भाव मे मज्जित मन
बोले आवेग रहित स्वर से विश्वास स्थित .
मातः, दशभुजा, विश्वज्योतिः, मैं हूँ आश्रित...

इस वैज्ञानिक सोच पर आधारित रणनीति के प्रकाश में आ जाने पर वाचक राम से जनशक्ति को "विश्वज्योति" के रूप में संबोधित करवाता है। राम के "लोचन" खुल गये।

यह नयी दृष्टि मध्ययुगीन दृष्टि से बिल्कुल भिन्न है। आज भी अज्ञानवश बहुत से लोग यह समझते हैं कि कोई अवतारी पुरुष नेतृत्व में आ जाये तो सभी दुखों और क्लेशों से उनकी मुक्ति हो सकती है। यह व्यक्तिकेंद्रित दृष्टिकोण अवैज्ञानिक और मिथ्याचेतना पर आधारित है। एक शोषणपरक व्यवस्था से मुक्ति तभी संभव है जब ऐतिहासिक रूप से नयी व्यवस्था को जन्म देने वाली शक्तियाँ सामाजिक वर्गों के बहुसंख्यक हिस्सों को अपने पक्ष में कर लें। मसलन, दास व्यवस्था से मुक्ति के लिए सामंतवाद ऐतिहासिक भूमिका अदा करता है लेकिन पूरे समाज को अपने पक्ष में करके ही यह संभव हो सकता है, इसी तरह सामंतवाद से मुक्ति का ऐतिहासिक दायित्व पूंजीपति वर्ग पर है,, लेकिन उसे भी शक्तिसंतुलन अपने पक्ष में करना होता है।

विश्वपूंजीवाद जब साम्राज्यवाद की अवस्था में पहुंच कर दूसरे देशों को पराधीन बना लेता है तो राष्ट्रीय मुक्ति का दायित्व उस देश में उपजे राष्ट्रीय पूंजीपतिवर्ग पर या उस वर्ग के कमज़ोर होने पर वहाँ के नवोदित मजदूर सर्वहारा वर्ग पर आ जाता है लेकिन उसे भी विजय तभी मिल सकती है जब पूरे राष्ट्र की जनशक्ति उसके साथ एकजुट खड़ी हो, जैसा कि राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों का इतिहास सिद्ध करता है। निराला ने यह कविता 1936 में लिखी थी, लेकिन इसमें दी गयी रणनीति से ही हमें आज़ादी मिली, किसी एक व्यक्ति की चमत्कारी शक्ति से नहीं। इस अर्थ में यह कविता एक "प्रोफेटिक" रचना है।[7]

इस कविता में "नयन" और "ज्योति" के बिंबों का जो पैटर्न है वह भी इसी प्रतीकार्थ को खोलता चलता है। कविता के पूर्वार्द्ध में "रावण जय भय" की आशंका और सीता की मुक्ति के अभियान में सफलता न मिलने से पैदा होने वाली निराशा के लिए कवि ने "अंधकार" के बिंब का प्रयोग किया और झीनी आशा के लिए "ज्योति" के बिंब साथ-साथ रचे। "नयन" के साथ भी यही हुआ, राम के "नयन" निराशा के क्षणों में बार-बार "सजल" हुए। मगर जब जाम्बवान द्वारा सही वैज्ञानिक रणनीति सामने लायी गयी तो "खिल गयी सभा", राम के "इंदीवर निंदित लोचन खुल गये।" शक्ति की मौलिक कल्पना का इंगित पा कर मुक्त होने पर वे शक्ति का प्रतीक खोलते हैं। यह तस्वीर भारत की तस्वीर है जिसे राम अपने "बंधुवर" यानी सेनापतियों आदि को समझाते हैं। यहाँ राम "चंद्रमुखनिंदित रामचंद्र" हैं, "अमा निशा में बैठे "विषण्णानन" राम नहीं। इसी अवस्था में "अमा निशा" और "धन अंधकार' का अंत हो जाता है :

निशि हुई विगत, नभ के ललाट पर प्रथम किरण
फूटी रघुनंदन के दृग महिमा-ज्योति-हिरण

राम शक्ति की मौलिक आराधना करते हैं, इस आराधना के लिए राम ने शक्ति का जो रूप कल्पना में निर्मित किया है, वह स्पष्टतः भारतमाता का रूप है। वे अपने साथियों को बताते हैं :

देखो, बंधुवर, सामने स्थित जो वह भूधर
शोभित शत-हरित-गुल्म-तृण से श्यामल सुंदर
पार्वती कल्पना हैं इसकी मकरंद-बिंदु
गरजता चरण-प्रांत पर सिंह वह नहीं सिंधु

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

दशदिक-समस्त हैं हस्त, और देखो ऊपर
अंबर में हुए दिगंबर अर्चित शशि शेखर

यह वर्णन "भारति, जय विजय करें" में वर्णित मातृभूमि के चित्र से काफी मिलता जुलता है। इस भारत भमि की जनशक्ति को समर्पित हो कर ही कोई मुक्तिकामी नेतृत्व विजय हासिल कर सकता है। गांधीजी ने भी सबसे पहले इस पूरी भारत भूमि का दौरा किया था और इस शक्ति को पहचानने का पहला काम किया था, और फिर उसी शक्ति का मौलिक आराधन किया था। अमरीका में लिंकन ने, रूस में लेनिन ने, चीन में माओ ने, वियतनाम में हो ची मिन्ह ने, क्यूबा में फिदेल कास्त्रो ने इसी जनशक्ति की मौलिक आराधना की थी, इस जनशक्ति के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने को ये क्रांतिकारी तैयार थे, अपने-अपने देशों के मुक्ति समर में विजयी भी तभी हुए जब इस जनशक्ति ने उन्हें अपना बना लिया।

"राम की शक्तिपूजा" में यही वैज्ञानिक रणनीतिक सार्वभौमिक सत्य मिथकीय रूप धारण करके आया है। कविता में राम हनुमान से 108 या उससे भी ज्यादा कमल लाने को कहते हैं, जिन्हें चढ़ाकर राम शक्ति की पूजा करेंगे।

राम ने शक्ति की पूजा शुरू की, "कर जप पूरा कर एक चढ़ाते इंदीवर" जब पूजा की प्रक्रिया पूरी होने जा रही थी, कि तभी दुर्गा अंतिम कमल उठा लें गयीं, हर एक साधना में परीक्षा होती है, राम की साधना की भी परीक्षा होनी ही थी। देवी पर कमल चढ़ाने का उपाय राम को सूझ गया :

"यह है उपाय" कह उठे राम ज्यों मंद्रित घन
"कहती थीं माता मुझे सदा राजीव-नयन
दो नील-कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण
पूरा करता हूँ देकर मातः एक नयन।"

जैसा कि कहा जा चुका है, इस कविता का केंद्रीय बिंब "नयन" है और भावनानुकूल "ज्योति" का भी बिंब प्रयुक्त हुआ है, ये दोनों बिंब अन्योन्याश्रित भी हैं। इसीलिए राम का मन जैसे ही समाधान खोजने के लिए कृतसंकल्प होता है वहाँ ज्योति के बिंब का इस्तेमाल होता है। राम का मन "बुद्धि के दुर्ग पहुंचा विद्युत-गति हतचेतन/राम में जगी स्मृति, हुए सजग पा भाव प्रमन।" यहाँ "विद्युत गति" के द्वारा ज्योति के बिंब की उपस्थिति भी दर्ज करायी गयी है, जैसा कि कविता के अन्य अंशों में भी हुआ है।

राम अपने एक "नयन" को बाण से निकालने को उद्यत होते हैं, शक्ति की आराधना के लिए यह बलिदान "सरफरोशी की तमन्ना" की ही तरह है :

ले अस्त्र वाम कर, दक्षिण कर दक्षिण लोचन
ले अर्पित करने को, उद्यत हो गये सुमन

बलिदान की इस भावना से शक्ति राम पर प्रसन्न हो गयीं, उन्होंने प्रकट होकर राम का हाथ थाम लिया। राम ने इस शक्ति को देखा। इस शक्ति को कविता में "ज्योतिर्मय रूप" कहा गया है। इस शक्ति ने राम से कहा, "होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन।" और यह कहकर "महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।"

जनशक्ति जिस नेतृत्व के पक्ष में हो जाएगी, उसकी विजय होने में संदेह की कोई गुंजाइश नहीं। यह कविता इसी जनशक्ति की पूजा की कविता है। इस सार्वभौमिक सत्य को सड़ी-गली समाज व्यवस्था से मुक्ति की छटपटाहट महसूस करने वाले हर युग के संवेदनशील रचनाकार ने खोजा था। शेक्सपीयर ने "जूलियस सीज़र" नामक अपने नाटक में इसी सत्य की खोज की थी। उसमें साधारण जन की केंद्रीय भूमिका है, रोम की जनशक्ति को अपने पक्ष में करने की कोशिश से ही नाटक की शुरुआत होती है। फ्रांस की 1789 की क्रांति भी इसी सत्य का जीता जागता उदाहरण थी। हमारी आज़ादी की लड़ाई भी इसी सत्य की साक्षी है और भविष्य में शोषकवर्गों से मुक्ति के लिए लड़े जाने वाले निर्णायक समर में भी यही सत्य काम आएगा। इसी सत्य को मुक्तिबोध की कविता, [8]"अंधेरे में" फैंटेसी के माध्यम से बयान करती है, जब उसमें वाचक गांधी जी को देखता है। उसमें गांधीजी वाचक को बताते हैं :

"दुनिया न कचरे का ढेर कि जिस पर
दानों को चुगने चढ़ा हुआ कोई भी कुक्कुट
कोई भी मुर्गा
यदि बांग दे उठे ज़ोरदार
बन जाये मसीहा"

वे कह रहे हैं :

"मिटटी के लोंदे में किरगीले कण कण
गुण हैं
जनता के गुणों से ही संभव
भावी का उद्भव"

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

"अंधेरे में" का मध्यवर्गीय वाचक अकेलेपन का और "निस्संगता" का विचार पाले हुए यह सोच रहा था कि उसकी मुक्ति अकेलेपन में ही है जैसा कि आधुनिकतावादी और अस्तित्ववादी चिंतकों और रचनाकारों ने प्रचारित किया हुआ था। नीत्शे की महामानव की अवधारणा भी हमारे यहाँ के अवतारवाद की धारणा जैसी एक मिथ्या धारणा ही थी कि कोई अवतारी पुरुष या कोई डिक्टेटर मुक्ति दिलवा सकता है। मुक्तिबोध ने "अंधेरे में" के वाचक को जीवन-जगत के अनुभवों से गुजारते हुए और आज़ादी के संघर्ष के वैज्ञानिक सत्यों से परिचित कराते हुए इस यथार्थवादी मंजिल तक पहुंचाया कि मुक्ति अकेले में नहीं मिलती और मुक्ति का मसीहा भी हर कोई नहीं बन सकता, "जनता के गुणों से ही संभव/भावी का उद्भव।" यह जनशक्ति जब मुक्तिकामी नेतृत्व के साथ होगी, और जब यह नेतृत्व भी ऐतिहासिक रूप से उत्पन्न नये वर्ग यानी आज की स्थिति में सर्वहारावर्ग का होगा तभी समाज व्यवस्था बदलने में मुक्तिकामी नेतृत्व सक्षम होगा।

"राम की शक्तिपूजा" में राम को इसी जनशक्ति का आराधन करना पड़ता है, "अंधेरे में" कविता में मध्यवर्गीय वाचक को भी मुक्ति के लिए अपना "व्यक्तित्वांतरण" करना पड़ता है, उसे सर्वहारावर्ग के साथ अपना तादात्म्य करना पड़ता है, "साथी" खोजने पड़ते हैं :

मुझे अब खोजने होंगे साथी
काले गुलाब व स्याह सिवंती
श्याम चमेली
संवलाये कमल जो खोहों के जल में
भूमि के भीतर पाताल तल में
खिले हुए कब से भेजते हैं संकेत

ये श्याम वर्ण के सारे फूल सर्वहारा साथी ही हैं जो हर जगह श्रम के कार्यों में लगे हैं और मौजूदा समाज को बदल कर एक शोषणविहीन समाज रचने की क्षमता रखते हैं क्योंकि ऐतिहासिक रूप से यह जिम्मेदारी उन्हीं के कंधों पर है। "राम की शक्तिपूजा" में जनशक्ति नेतृत्व के साथ मिलकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद से भारतीय समाज को मुक्त कराती है, **"अंधेरे में"** की फैंटेसी में जनशक्ति सर्वहारावर्ग के नेतृत्व में होने वाली जनवादी क्रांति में अपना साथ देकर शोषणविहीन समाज बनाने का भविष्य का नक्शा बनाती है।

परिणाम

निराला की कविता "राम की शक्तिपूजा" के सिलसिले में रूपवादी समीक्षकों और अकादमिक हलकों में यह सवाल भी चर्चा का विषय बनता है कि इस कविता का काव्यरूप क्या है, यानी यह कविता क्या एक महाकाव्य है, खंडकाव्य है या कोई नया काव्यरूप है। दर असल, ये सवाल ऐसे आलोचक उठाते हैं जो हर रचना को कहीं न कहीं बंधी बंधायी काव्यशास्त्रीय परंपराओं के चौखटे में फिट करना चाहते हों। वे यह नहीं जानते हैं कि अन्य क्षेत्रों की ही तरह रचना के क्षेत्र में भी विकास होता है, पुराने चौखटे टूटते हैं, नयी संरचनाएँ अस्तित्व में आती हैं और नये काव्यरूप भी बनते हैं। निराला तो हिंदी कविता को पुरानी रूढ़ियों से मुक्त करके **"नये"** के विधान के लिए कृतसंकल्प थे। वे समाज की मुक्ति से प्रेरित होकर कविता की मुक्ति की भी बात करते थे। उनकी इस मुक्तिकामी विचारधारा को ध्यान में रखें तो इस सवाल का एक ही जवाब होगा कि यह कविता का एक "नया" काव्यरूप है जिसे "लंबी कविता" कहा जा सकता है। रामकथा पर आधारित होने के कारण इस कविता में महाकाव्य के गुण नजर आ जायेंगे, खंडकाव्य की विशेषताएं भी दिखायी दे जायेंगी, मगर इन काव्यरूपों को ध्यान में रखकर इस कविता की रचना की गयी नहीं जान पड़ती।

नये काव्य-रूप हर समाज में पूंजीवाद के उदय के साथ वजूद में आये। **"उपन्यास"** नामक विधा भी पूंजीवाद के उदयकाल में ही अस्तित्व में आयी। जब पुराने काव्यरूप नये कथ्य को अभिव्यक्त करने में समर्थ नहीं होते तो रचनाकार पुरानी रूढ़ियों को तोड़कर नये समाज के अनुकूल भावाभिव्यक्ति के नये माध्यम तैयार कर लेते हैं। इसी सामाजिक प्रक्रिया से हर देश में नये काव्यरूप और नयी साहित्यिक विधाओं का आविष्कार हुआ। पूंजीवाद के विकास के साथ वैज्ञानिक प्रगति का सिलसिला भी जुड़ा हुआ है। हमारे देश में ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्ति के दौर में हर संवेदनशील बुद्धिजीवी के लिए वैज्ञानिक सोच आगे बढ़ाना और नये-नये विचार समाज को देना तथा उन विचारों से समाज और कला का भंडार भरना राष्ट्रीय कर्तव्य बन गया था। हिंदी के रचनाकार भी इसी प्रयास में जुटे थे कि उनकी कल्पनाशक्ति इसी सांस्कृतिक और वैज्ञानिक समृद्धि द्वारा अपने समाज को उन्नत और आधुनिक समाज बना दे।[9]

यही वजह है कि **"राम की शक्तिपूजा"** एक मिथकीय ढांचे में बंधी होने पर भी एक नया प्रयोग है क्योंकि उसकी मूल संवेदना वैज्ञानिक सामरिक रणनीति को पेश करती है, सामाजिक बदलाव की मूल प्रकृति की खोज करती है और उसी कथ्य के मुताबिक एक नया काव्यरूप ईजाद करती है। पश्चिमी देशों में भी पूंजीवाद के उभार के दौर में इसी तरह का नया काव्यरूप अस्तित्व में आया जैसा कि हम वाल्ट व्हिटमैन, वर्डस्वर्थ, कीट्स, शैले आदि की लंबी कविताओं में देखते हैं और इसी दौर मे हमारे अपने देश की अन्य भाषाओं के काव्य में भी उसके उदाहरण मिलते हैं।

राम की शक्तिपूजा" में जहाँ विधागत नवीनता है वहीं इसका संरचनात्मक सौंदर्य भी अनूठा है। एक नाटकीय रचना होने के कारण इसमें वर्णन कौशल, नाद सौंदर्य, भावानुकूल भाषा-प्रयोग और पात्रों का जीवंत कर्म कौशल (एक्शन) या गतिमान चाक्षुस बिंबों का

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

समावेश देखने को मिलता है। इस कविता के रचनात्मक सौंदर्य में भी निराला ने परंपरागत उपादानों के साथ-साथ बहुत सारे नये उपादान प्रयुक्त किये हैं। उदाहरण के तौर पर फ्लैशबैक तकनीक के इस्तेमाल को देखा जा सकता है। इस रचना की कथावस्तु सीधी सपाट नहीं है, उसमें वर्तमान से विगत की ओर और फिर विगत से वर्तमान की ओर आवाज़ाही रहती है और अंत में आगत की ध्वनि या घोष का प्रयोग है। जिस तरह काल के इन तीनों आयामों से यह रचना क्रीड़ा करती है, उसी तरह **"स्थान"** के आयाम भी बदलती है। राम अपने वर्तमान में रणभूमि में हैं, मगर स्मृति में वे जनक वाटिका में लौटते हैं : "याद आया उपवन/विदेह का " | हनुमान भी कई बार स्थान परिवर्तन करते हैं। वे आकाश से लेकर "देवी दह" तक विचरण करते हैं। इस तरह यह रचना आधुनिक चित्रपट शैली की तरह देशकाल के विविध आयामों का इस्तेमाल करती

इस कविता के संरचनात्मक सौंदर्य में नादयुक्त भाषिक प्रयोगों का विशेष योगदान है। कविता के प्रारंभिक अंश में जहाँ "राम रावण का अपराजेय समर/आज का" वर्णित है, यह भाषिक नाद सौंदर्य देखने लायक है। इस अंश को गौर से देखें तो "ण" वर्ण से युक्त शब्दों की भरमार मिलेगी, जैसे "तीक्ष्ण", "सम्वरण", "बाण", "रावण", "कारण", "कोदण्ड", "भीषण", "अगणित" आदि। इसी तरह ."भ" वर्ण के शब्द भी चुन-चुन कर प्रयुक्त हुए हैं। इन वर्गों से युद्ध के होने का नाद चमत्कार पैदा हुआ है। इसके ठीक विपरीत जानकी स्मृति के प्रकरण में या शिव के कहने से अंजनीरूप में पार्वती का हनुमान को प्रबोधन प्रकरण में इस तरह की ध्वनियों का अभाव है। देखिए :

बोली माता- "तुमने रवि को जब लिया निगल
तब नहीं बोध था तुम्हें, रहे बालक केवल
यह वही भाव कर रहा तुम्हें व्याकुल रह रह,
यह लज्जा की है बात कि मां रहती सह सह,
यह महाकाश, है जहाँ वास शिव का निर्मल
पूजते जिन्हें श्रीराम उसे ग्रसने को चल,
क्या नहीं कर रहे तुम अनर्थ ? — सोचो मन में,
क्या दी आज्ञा ऐसी कुछ श्री रघुनंदन ने ?
तुम सेवक हो, छोड़कर धर्म कर रहे कार्य
क्या असंभाव्य हो यह राघव के लिए धार्य ?"
उक्त पूरे प्रबोधन में कहीं भी "ण" वर्ण का प्रयोग नहीं है।

इस तरह का वैविध्य जो कि भावानुकूल है शैली के स्तर पर भी देखने को मिलता है। राम-रावण का अपराजेय समर जहाँ वर्णित है वहाँ समासयुक्त पदावली या समस्त पदावली का प्रयोग है। शुद्ध संस्कृतनिष्ठ पदावली और समासों से बोझिल, युद्ध का नाद सजीव करती हुई पदावली उस अंश में प्रयुक्त हुई है जबकि उस अंश के समाप्त होते ही शैली बदल जाती है। सरल शब्दावली जिसे ध्वनि बिंबों के स्थान पर चाक्षुष बिंबों से सजाया गया है प्रयोग में लायी गयी है :

है अमा निशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अंबुधि विशाल
भूधर त्यों ध्यान मग्न, केवल जलती मशाल।

इस तरह हम देखते हैं कि "राम की शक्तिपूजा" अपने पूरे कलात्मक सौंदर्य के साथ अपने युग के सामाजिक सत्य से जुड़ती हुई एक सार्वभौमिक प्रक्रिया का बयान करती है जिसे असत्य के ऊपर सत्य की विजय के लिए हर बार अपनाना पड़ेगा। स्वाधीनता का पक्ष सत्य का पक्ष था, ब्रिटिश साम्राज्यवाद का पक्ष असत्य का पक्ष था, उस असत्य के खिलाफ विजय तभी हासिल हुई जब भारत की जनशक्ति नेतृत्व के साथ हो गयी। भविष्य में भी जब शोषण पर आधारित व्यवस्था को बदलकर शोषण विहीन समाज बनाने का समर तेज होगा, उसकी विजय भी तभी सुनिश्चित होगी जब भारत की या किसी ऐसे समाज की जनशक्ति उदीयमान सर्वहारावर्ग के वैचारिक-राजनीतिक नेतृत्व के साथ होगी और वर्गीय संतुलन क्रांतिकारी सर्वहारावर्ग के पक्ष में हो जाएगा। जब तक शोषित जनता बड़े पूंजीपतियों भूस्वामियों के राजनीतिक-वैचारिक नेतृत्व के चंगुल में फंसी रहेगी यानी असत्य की गोद में रहेगी, तब तक शोषण विहीन समाज बनाने वाली शक्तियों की विजय संभव नहीं। इसलिए सर्वहारा वर्ग को भी शक्तिपूजा की मौलिक कल्पना करनी पड़ती है। सारी क्रांतियों का इतिहास इस बात का साक्षी है। "राम की शक्तिपूजा" इसी ऐतिहासिक अनुभव को काव्यात्मक स्तर पर प्रस्तुत करती है। संवेदनात्मक स्तर पर समाहित यह सार्वभौमिक सत्य ही इस रचना को महान बनाता है, इसी तत्व की वजह से यह कविता एक इलहामी या प्रोफेटिक कविता भी बन जाती है। निराला की यह कविता हिंदी साहित्य की श्रेष्ठतम रचनाओं में से एक है।[10]

निष्कर्ष

काव्य का उत्स अंतर की गहराइयों में है और कहा भी जाता है कि कला का जन्म अंतश्चेतना से होता है । काव्य अध्ययन की पूर्णता की दिशा में व्यक्तित्व के अध्ययन और विश्लेषण का भी महत्व है। जब तक व्यक्तित्व का परिचय पूर्ण नहीं हो जाता काव्य का

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

अध्ययन पूर्णता का अधिकारी कठिनता से कहा जाएगा । निराला के काव्य के अध्ययन के लिए यह और भी आवश्यक हो जाता है क्योंकि जिस छायावाद का ऐतिहासिक व्यक्तित्व माना जाता है उसकी बड़ी देन यह भी है कि साहित्य को ही ऐतिहासिक व्यक्तित्व उसे नहीं मिला वरन् कवियों को भी ऐसे व्यक्तित्व का देय उससे मिला है।

निराला के व्यक्तित्व के अध्ययन से उनके काव्य के स्पष्टीकरण की दिशा में ही केवल सरलता नहीं आएगी बल्कि वर्ण, समाज, साहित्य और उस आंदोलन की विशेषताएं भी समझ में आ जाएंगी जिसके वे अग्रदूत हैं। अनवरत अपराजिता आधुनिक हिंदी कविता के सम्मानोन्नत ललाट पर आज जो अनुपम सुषमामयी सौभाग्य रेखा अंकित है उसमें कुछ निराला की प्रतिभा के प्रतिभासम्मान कुंकुम -कण भी सम्मिलित हैं ।

यह समूल सत्य है कि पंत, प्रसाद, निराला को लोकप्रियता की अभय, कुल, प्लाविनी कल्लोलित त्रिवेणी में निराला की पाटल सलिला काव्यधारा 'सरस्वती' का पद पूर्ण करता रही है ,पर विशेषता के तात्विक अनुसंधान के समय उनकी यही रहस्यमई गोपन प्रवृति लोगों की कलुषित राग , द्वेष, दुष्ट दृष्टि की ज्वाला से परे चिर द्युति और चिर शीतलता का कारण हो सकती है ।

विषम परिस्थितियों में जहां निराला टूटते हैं वही अपने अंतर में शक्ति ग्रहण के जीवन संघर्ष से जुड़े भी हैं यही कारण है कि निराला के नेतृत्व में हम सक्रियता ,रूढ़ियों का विरोध, विद्रोह व क्रांति का स्वर विशेष रूप से देखते हैं तो दूसरी ओर करुणा तथा जगत की नश्वरता का भी रूप देख पाते हैं। निराला ने छंद को ही निर्बंध नहीं किया वरन् स्वयं बंधन रहित रहें।फकीरी और स्वाभिमानी उनके स्वभाव में रही ।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने निराला को 'सजग कलाकार' कहा है। पंडित नंददुलारे वाजपेई ने उनके लिए 'सचेत कलाकार' अभिधा का प्रयोग किया है और घोषित किया कि "कविताओं के भीतर जितना प्रसन्न अथवा अस्खलित व्यक्तित्व निराला जी का है उतना न प्रसाद जी का है न पंत जी का ।" हिंदी के साहित्यकार जिसमें शिवपूजन सहाय ,बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' या सुमित्रानंदन पंत या दिनकर के बाद रचनाकार जिनमें शमशेर ,नागार्जुन, गिरिजाकुमार माथुर, प्रभाकर माचवे और नरेश मेहता ने कभी कविताओं , कभी लेखों और कभी समीक्षाओं के माध्यम से हिंदी क्षेत्र में निराला की कविता की प्रतिष्ठा की है।

आचार्य नंददुलारे वाजपेई ने निराला के निधन को 'शताब्दी के कवि का अवसान' कहा था । यद्यपि महाकवि की मृत्यु के बाद इस शताब्दी के शेष होने में 39 वर्ष बाकी थे और हिंदी कविता के परवर्ती रूपों का प्रकाश में आना शेष था। परंतु इस शताब्दी के अंत में पहुंचकर यह तथ्य सहज ही स्वीकार करना पड़ता है कि बीसवीं सदी के हिंदी काव्य में निराला जैसे व्यक्तित्व एवं कृतित्व का कवि दूसरा नहीं है।[11]

यह निराला की काव्य प्रतिभा का वैशिष्ट्य है कि वे आज भी कवियों एवं साहित्यकारों के लिए प्रेरणा के अक्षय स्रोत बने हुए हैं । आधुनिक काल के साहित्यकारों में केवल निराला ही ऐसे सर्जक हैं जिनके प्रति श्रद्धा ज्ञापन की सर्वाधिक कविताएं उपलब्ध हैं । इन प्रशस्ति परक कविताओं के रचनाकारों की सूची में हिंदी के लगभग सभी श्रेष्ठ कवि आते हैं । इन कविताओं की संख्या इतनी है कि इन्हें संकलित कर एक अच्छा ग्रंथ तैयार किया जा सकता है। यह कहना अतिश्योक्ति पूर्ण नहीं होगा कि समस्त हिंदी साहित्य में तुलसीदास के बाद केवल निराला ही ऐसे साहित्यकार हैं जिनके प्रति जनसाधारण से लेकर विद्वान जनों का समान झुकाव है। उनका कृतित्व यदि ' बुद्ध विश्राम ' है तो उनका व्यक्तित्व ' सकल जन रंजन ' करने में समर्थ है। हिंदी जगत उनके साहित्य के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व से भी अभिभूत रहा है।

निराला जी को यह स्थान यूं ही प्राप्त नहीं हुआ, परंपरा के स्वस्थ पक्षों के साथ समकालीनता का विवेकपूर्ण समन्वय तथा सुंदर समाज की संरचना हेतु कांतदर्शी चेतना ने निराला को कालजयी रचनाकार की प्रतिष्ठा प्रदान की । उनमें कबीर और तुलसी दोनों के व्यक्तित्व एवं गुण वैशिष्ट्य एक साथ समाहित हैं।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों ही क्षेत्रों में वैविध्य ही उन्हें सही अर्थों में निराला बनाता है। ' वन वज्रदपि कठोरानि मृदुनि कुसुमादपी ' उक्ति यदि उनके व्यक्तित्व पर सही उतरती है तो उनकी रचनाओं में कथ्य, भाषा, भाव तथा अभिव्यक्ति की विविधता उन्हें दूसरे साहित्यकारों से पृथक करती हैं। यह वैविध्य ही साहित्य के अध्येताओं तथा आलोचकों को निराला साहित्य के पुनः मूल्यांकन हेतु प्रेरित करता रहा है।

कोई लेखक जो कुछ लिखता है वह सब रचना नहीं हो जाती। श्रेष्ठ लेखक द्वारा भी कभी-कभी ही रचना प्रस्तुत होती है कोई भी लिखित वस्तुरचना कब बनती है? यह एक बहुत जटिल मनोविज्ञान है। निराला ने भी सैकड़ों कविताएं लिखी लेकिन उनकी कुछ एक कविताएं ही ऐसी हैं जिनसे हम निराला को निराला के रूप में पहचानते हैं।

कवि अत्यधिक संवेदनशील प्राणी है चेतना की जितनी गहरी और व्यापक अनुभूति उसे होती है उतनी निश्चय ही और किसी को नहीं होती। उसका व्यक्तित्व जितना गरिमा में होगा उसकी अनुभूति भी उतनी ही गौरवपूर्ण और महनीय होगी।अनुभूतियों का मूल स्रोत यथार्थ में निहित है और किसी अन्य की अपेक्षा कवि यथार्थ के अधिक निकट संपर्क में रहता है।

मूल्य मानवीय होते हैं ,अतः उनके संबंधों को काव्य में ही व्यक्त किया जा सकता है। मानवीय मूल्यों की ये अभिव्यक्तियां एक ओर युग चेतना से संयुक्त रहती हैं तो दूसरी ओर उनका अतिक्रमण भी कर जाती हैं, अर्थात युगीन मूल्यों में ही शाश्वत मूल्य अनुस्यूत रहते हैं। मेरे ख्याल में 'राम की शक्ति पूजा' की महत्ता युगीन चेतना तथा व्यक्तिगत गौरव के आधार पर ही विश्लेषित की जा

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

सकती है। प्रभाकर माचवे ने लिखा है :- "निराला की कविता में राष्ट्रीय भावधारा प्रत्यक्ष माइक्रोफोनी या प्रचारात्मक ध्वजवादी या नारीवादी कविता बनकर नहीं आई ।भारत के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक जीवन के उसके उथल पुथल के बहुत सूक्ष्म और प्रत्यक्ष सूत्र निराला की रचना में विद्यमान हैं । "

इसलिए निराला के युगबोध एवं मानवतावादी दृष्टिकोण का पूर्णरूपेण प्रतिपादन उनके काव्य में स्वीकारा जा सकता है ।

युगबोध अपनी धरती , अपनी प्रकृति, अपने संस्कृति , अपने वर्तमान को भलीभांति जानना ,उसकी अनुभूति होना है। इसमें राजनीतिक ,सामाजिक, धार्मिक ,साहित्य, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों के अतिरिक्त आध्यात्मिकता, एकता, प्रकृति चित्रण, उत्थान की कामना, प्राचीन गौरव का स्मरण, वर्तमान अध: पतन की पीड़ा एवं उसकी अनुभूति ,भविष्य की चिंता, नव सांस्कृतिक चेतना तथा जन जागरण आदि भी समाविष्ट होते हैं।

राम रावण के युद्ध को इसमें " ना भूतो ना भविष्यति " नहीं कहा गया है बल्कि युद्ध की पीड़ा पर घोर अंतर्मंथन को सशक्त वाणी दी गई है । राम , रावण और उनका युद्ध तीनों प्रतीक है। यह युद्ध जीवन और मरण में बराबर चलता रहता है , मनुष्य के अंतर्जगत में चलने वाले युद्ध की विभीषिका कम उद्वेगजनक नहीं होती। यह तो सामयिक भी है, सनातन भी।[12]

निराला ने 'राम की शक्ति पूजा' काव्य में राम के द्वारा अपने युग की निराशा, पराजय , संघर्ष एवं विजय कामना का सजीव चित्रण किया है । रावण रूपी अंग्रेजों को परास्त करने के लिए राम शक्ति की आराधना करते हैं तभी सीता रूपी भारत माता को रावण पाश से मुक्त किया जा सकता है। राम अपने को नहीं धिक्कार रहे हैं अपितु भारतीय अपने को धिक्कारते हुए कह रहे हैं :-

"धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध
धिक् साधन जिनके लिए सदा ही किया शोध "

बार-बार युद्ध होने पर उसके अनियत बने रहने के कारण राम को शक्ति की आराधना करनी पड़ी शक्ति प्रसन्न होकर राम को विजय होने का आशीर्वाद देकर उनके बदन में लीन हो गई :-

"होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन!"

निराला की दर्शन चेतना को भी उनके काव्य से पृथक नहीं किया जा सकता । निराला पर भारतीय वेदांत ,रामकृष्ण और विवेकानंद का गहरा प्रभाव था। भारतीय दर्शन के एक समन्वित रूप को उन्होंने अपनी आत्मा में साधा था । शैव, शाक्त दर्शनों का भी उन पर प्रभाव था । 'राम की शक्ति पूजा' में योग, वेदांत , शैव, शाक्त दर्शन को एक साथ देख सकते हैं।

प्रत्यभिज्ञा दर्शन का पहला ही सूत्र है : – 'प्रकृति स्वतंत्र है, वह विश्व सिद्धि का हेतु है , सब का कारण ।' शाक्त दर्शन शक्ति या प्रकृति को ही कारण भूत मानता है ।

'राम की शक्ति पूजा' में निराला कहते हैं कि 'शक्ति की मौलिक कल्पना करो।' यह मौलिक कल्पना विराट प्राकृतिक आयोजन है क्योंकि सारी प्रकृति चैतन्य है और शक्ति रूपा है ।

निराला ने इस युद्ध को देखा ही नहीं बल्कि क्रियात्मक रूप से अनुभव किया । दर्शक की अनुभूति की अपेक्षा सैनिक की युद्ध – जन्य अनुभूति कहीं अधिक गहरी होती है ।राम की तरह निराला ने भी अनुभव किया था कि "वह हो गए आज रण में श्रीहत, खंडित।" वह भी तो समाज की प्रतिक्रियावादी शक्तियों से जूझ रहे थे काव्यगत रूढ़ियों को तोड़ रहे थे। समस्त देश साम्राज्यवादी सत्ता के विरुद्ध लड़ रहा था किंतु प्रगतिशील शक्तियां संशय ग्रस्त थी – "रहे उठता जगजीवन में रावण -जय – भय ।" निराला ने यथार्थ को अनुभूति किया।

राम जिस स्थिति में चित्रित हुए हैं उनका मनोबल अतिशय दुर्बल और गतिशील हो गया देश जिस स्थिति से गुजर रहा था उसमें वह निराश हो चुका था। स्वयं निराला परिस्थितियों से लड़ते हुए क्षीण से प्रतीत हो रहे थे। राम की शक्ति – आराधना इन सब का शक्ति आराधन है।[10]

युगीन बोध की चर्चा करते समय जब हम ऐतिहासिक संदर्भों में जाते हैं तो हम पाते हैं कि 19वीं सदी के अंत में भारत में दो नए वर्गों का उदय हुआ था यह नए वर्ग थे औद्योगिक पूंजीपति और उनके तहत काम करने वाला मजदूर वर्ग। निराला के समय में भारतीय समाज और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के बीच युद्ध और अधिक तीव्र होता जा रहा था। 'राम की शक्ति पूजा' जिस दौर में लिखी गई थी उस दौर में पूंजीपति वर्ग के यहां का मजदूर वर्ग भी राजनीति में कूद चुका था , उसने भी अपनी राजनीतिक पार्टी जो कि हर देश में कम्युनिस्ट पार्टी के रूप में वजूद में आती है भारत में बना ली थी । वह भी भारत के शोषितों को साम्राज्यवाद से मुक्त कराने के लिए प्रयासरत था।

हमारे यहां देखें तो भारतेंदु हरिश्चंद्र से लेकर मैथिलीशरण गुप्त और निराला, पंत, प्रसाद, महादेवी वर्मा आदि और फिर प्रगतिवादी साहित्य को इन्हीं वर्गों के विचारों की अनुगूंज से भरा हुआ पाएंगे। 'राम की शक्ति पूजा' को इस ऐतिहासिक संदर्भ से काटकर विश्लेषण करना कतई सही नहीं होगा। निराला ने तमाम मिथकीय प्रयोगों, प्रतीकों को चाहे वह " सरस्वती" का हो या "दुर्गा" का हो या "राम" का हो मातृभूमि की गुलामी से मुक्ति के संवेदनात्मक उद्देश्य से ही अपनी कविताओं में प्रयुक्त किया है।यदि वे मिथकीय प्रयोग सिर्फ मिथकों को ही व्याख्यायित करने के लिए करते या सिर्फ अपनी मनोगत चिंताओं और निजी दुखों या भावनाओं को व्यक्त करने के लिए करते तो यह कविताएं स्थाई महत्व की हो भी नहीं सकती थी।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

निराला ने राम नाम को ही इस कविता में प्रतिपादित क्यों किया? जबकि यह शब्द तो अपने संबोधन से ही अवतार का संबंध स्पष्ट करता है , क्योंकि मध्यकालीन साहित्यकारों ने इस नाम को अवतार के रूप में मुख्यतः दर्शाया है और वह उसी रूप में बंधा हुआ है। राम – नाम के संबंध में नंददुलारे वाजपेई का कथन है :-
"उनके सम्मुख कोई बने बनाए आदर्श या नपे तुले प्रतिमान ना थे इसलिए जो कुछ भी उन्हें उदाहरणों में अच्छा और उपयोगी दिखाई दिया उसी को वह नए सांचे में ढालने लगे। राम और कृष्ण उनके सर्वाधिक समीपी और परिचित नाम थे । अतएव इन्हीं चरित्रों को उन्होंने अपने नए सामाजिक आदर्शों की अनुरूपता देने की ठानी।"
निराला के सम्मुख प्राचीन आदर्श प्रतिमानों को छोड़कर नवीन आदर्श रूप में कोई प्रतिमान नहीं आया था , इसलिए उन्होंने यहां नाम के रूप में राम को तो उद्धृत किया है , किंतु नवीन रूप में क्योंकि यह राम अवतारी राम नहीं बल्कि संशय युक्त मानव, अपने समय का साधारण मानव है जो अपने समय की परिस्थितियों से अवसाद ग्रस्त भी हैं :-

"जब सभा रही निस्तब्ध: राम के स्तिमित नयन
छोड़ते हुए ,शीतल प्रकाश खते विमन
जैसे ओजस्वी शब्दों का जो था प्रभाव
उसमें न इन्हें कुछ चाव, ना कोई दुराव,
ज्यों ही वे शब्द मात्र – मैत्री की समुनुरक्ति,
पर जहां गहन भाव के ग्रहण की नहीं शक्ति।"

निराला की इस कविता का रचनाकाल सन् 1936 है अर्थात प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात का समय। इस कविता में युद्ध के मध्य उत्पन्न मानसिक प्रक्रिया है जिसमें राम के चरित्र के रूप में केवल मानवीय रूप उभर कर पग पग पर सामने आए हैं, जो प्राचीन राम कथा की रूढ़ियों को तोड़ नवीन दृष्टिकोण को परिभाषित कर रहा है :-

"स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा फिर फिर संशय,
रह-रह उठता जगजीवन में रावण -जय -भय "
× × × × ×
" बोले रघुमणि – '"मित्रवर, विजय होगी ना समर"
"अन्याय जिधर, है शक्ति उधर !" "कहते छल – छल
हो गए नयन, कुछ बूंद पुनः ढलके दृगजल,
रुक गया कंठ । "

निराला ने अपनी कविता में मनोवैज्ञानिक भूमि का समावेश कर उसे एक नवीन दृष्टिकोण दिया है। बंगाल कृति "कृतिवास" की कथा शुद्ध पौराणिक अर्थ की भूमि पर स्पष्टता रखती है। परंतु निराला ने अर्थ की कई भूमियों का स्पर्श किया है और उसमें युगीन चेतना आत्म संघर्ष का बड़ा प्रभावशाली चित्रण किया। 'राम की शक्ति पूजा' 'कृतिवास' से सर्वाधिक प्रभावित एवं प्रेरित है। कृतिवास के अनेक वर्णन 'राम की शक्ति पूजा' से मिलते जुलते हैं। यथा :-

"साधु साधु साधक धीर, धर्म धन जन्य राम !
कह लिया भगवती ने, राघव का हस्त थाम "
– राम की शक्ति पूजा
× × × × ×
" चक्षु आड़ते राम वसीला साक्षाते
हेन वाले कात्यायनी धरि लेन हाते । "
– कृतिवास

प्रकृति और मानव का अन्योन्याश्रित संबंध है। प्रकृति की इसी सुस्वारता , समरसता अथवा समन्वयधर्मिता की भाषा को टैगोर ने " मानव की आत्मा की भाषा कहा है।" निराला जी की लंबी कविताओं में प्रकृति का रूपात्मक चित्र कम दिखाई देता है। प्रकृति उनके लिए वर्णनात्मक नहीं, भावात्मक है । निराला काव्य प्रकृति वर्णन के लिए न होकर स्वानुभूतिमय पूजन और इससे भी बढ़कर मानव की परिष्कृत चेतना का संघनित उत्थान है।
'राम की शक्ति पूजा ','तुलसीदास','कुकुरमुत्ता' तीनों लंबी कविताओं में कवि निराला ने प्रकृति की पृष्ठभूमि का सहारा लेकर काव्य सृजन किया है। जीवन की विशिष्ट घटना, मानसिक उथल-पुथल, विराग, उल्लास वेदना की अनुभूति को कवि निराला ने प्राकृतिक पृष्ठभूमि या परिवेश में अभिव्यक्त कर इन लंबी कविताओं को नूतन आयाम दिया है :-

"रवि हुआ अस्त ज्योति के पत्र पर लिखा अमर,
रह गया राम रावण का अपराजेय समर ।"
"भारत के नभ का प्रभापूर्य

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

शीतल छाया सांस्कृतिक सूर्य
अस्तमित आज रे तमस्तूर्य दिगमंडल ।"
– राम की शक्ति पूजा
× × × × ×
"एक थे नवाब
फारस से मंगाए थे गुलाब
बाड़ी बाड़ी में लगाए।"
– कुकुरमुत्ता

अपराजेय समर के वर्णन की पृष्ठभूमि को प्राकृतिक वातावरण के साथ आरंभ करना ही इस बात का सूचक है कि कवि प्राकृतिक छटा के साथ ही कविताओं को गति प्रदान करना चाहता है। लंबी कविता 'राम की शक्ति पूजा' की प्राकृतिक पृष्ठभूमि कविता में मनः स्थिति को अभिव्यक्त करता है:-

"रवि हुआ अस्त ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम रावण का अपराजेय समर
आज का तीक्ष्ण-शर-विधृत-छिप्र- कर वेग प्रखर ,
शतशेल, संवरणशील, नीलगभ गज्जित स्वर।

'रवि हुआ अस्त' की पृष्ठभूमि इस महाकाव्य उचित लंबी कविता को प्रकृति रूपी नवीन आयाम से जोड़ती है। 'रवि हुआ अस्त' शब्दों की प्रकृतिजन्य मनोभूमि यह बताने के प्रयास कर रही है कि कवि का मन उदास है, निराश है। 'राम की शक्ति पूजा' में वीर रस की ओजपूर्ण व्यंजना के साथ प्रकृति चित्रण स्वयं में अनुपमेय है। निराला ने भाव गंभीरता एवं उदारता के साथ प्रकृति चित्रण प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है। निराला के युगबोध एवं मानवतावादी दृष्टिकोण के विषय में दूधनाथ सिंह ने लिखा है:-

"जनसाधारण के जिस सामान्य आदमी का कवि ने आत्मसाक्षात्कार किया है उसके रेखाचित्रों तक ही अपने को सीमित नहीं कर लिया बल्कि उसकी प्रतिष्ठा के लिए निरंतर अभियान चलाया [11]। प्रचलित लीक से हटकर कवि की अभिव्यक्ति युगीन चेतना के भाव बोध की चुनौती को स्वीकार करती है और सतत तिरस्कृत, पद दलित, उपेक्षित एवं अप्रतिष्ठित के सभी खतरे झेल कर प्रतिष्ठित करने का प्रयास करती है। रचना धर्मिता की निष्ठा और इमानदारी चरम सत्य का स्पर्श करती है।"

पराधीनता के बंधन से ग्रसित निरीह भारतीय जनता के वक्ता के रूप में निराला जी ने अपनी वाणी मुखरित की है। निराला के काव्य में अंधकार से बाहर निकलने और स्वतंत्रता के वातावरण में सांस लेने की अदम्य अभिलाषा परिलक्षित होती है। 'राम की शक्ति पूजा' के माध्यम से कवि निराला ने स्वयं राम के व्यक्तित्व में परिलक्षित होकर अथवा तत्कालीन राष्ट्रीय समस्याओं को स्वर दिया है।

राम अपने सेनापतियों से घिरे श्वेत शिला पर बैठे हैं चारों ओर अमानिशा का अंधकार छाया हुआ है। इस अंधकार के राम के मन की स्थिरता जैसे और विचलित होती जा रही है और उनके मन की संशयालु स्थिति भी बढ़ती जा रही है। राम के रूप में निराला तत्कालीन परिवेश ,देशकाल ,वातावरण से निराश हो उठते हैं और कहते हैं:-

"है अमानिशा; उगलता गगन घन अंधकार,
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहित गरज रहा पीछे अंबुधि विशाल,
भूधर जो ध्यानमग्न, केवल जलती मिशाल,
स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा फिर फिर संशय
रह रहे उठता जगजीवन में रावण – जय – भय ।।"

यहां अमानिशा के माध्यम से तत्कालीन परतंत्रता की वेदना को दर्शाने का प्रयास किया गया है। राम यद्यपि सदैव स्थिर रहे हैं किंतु आज उनके हृदय में बार-बार शंका आ रही है यह भय विचलित किए दिए रहा है कि कहीं इस युद्ध में रावण की विजय न हो जाए ऐसा हुआ तो संसार में अनाचार, स्वार्थ और पाप विकसित होगा और यह घोर अन्याय न्याय के विरुद्ध होगा।

'राम की शक्ति पूजा' में ही आगे निराला आततायी शक्तियों का दमन करने के लिए राष्ट्रीयता को जागृत करने के लिए हुंकार उठते हैं :-

"हे पुरुष – सिंह तुम भी यह शक्ति करो धारण
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर,
तुम करो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर,
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर रहा त्रस्त
तो निश्चय तुम ही सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त।।"

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

जामवंत के शब्दों में निराला कहते हैं कि जब अधर्मी लोग शक्ति ग्रहण कर सकते हैं तो नैतिक मूल्यों को मानने वाले क्यों नहीं?नैतिक मूल्यों को प्रतिष्ठापित करते हुए निराला कहते हैं कि सत्य की जय होगी , जय होगी और इस तरह राष्ट्रीयता को जागृत करते हैं :-

"होगी जय, होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन
कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन।"

महादेवी वर्मा ने निराला के बारे में कहा है :-

"अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों में उन्होंने कभी ऐसी हार नहीं मानी जिसे सहज बनाने के लिए हम समझौता करते हैं, स्वभाव से उन्हें वह निश्छल वीरता मिली है जो अपने बचाव के प्रयत्न को भी कायरता की संज्ञा देती है। उनकी वीरता राजनीतिक कुशलता नहीं है , वह तो साहित्य की एक निष्ठा का पर्याय है। निराला जी ऐसे ही विद्रोही कलाकार हैं। अनुभवों के दर्शन का विष साधारण मनुष्य की आत्मा को मूर्छित करके सारे जीवन को विषाक्त बना देता है , उसी ने उन्हें सतत जागरूकता और मानवता का मंत्र प्राप्त किया।"

समाज में व्याप्त अराजक तत्वों को 'राम की शक्ति पूजा' में आसुरी शक्ति दिखाकर और अंततोगत्वा आसुरी शक्तियों का दमन करा कर, नैतिक मूल्यों को मंडित करने वाले सदाचारी राम के द्वारा निराला जी ने मानवता को प्रतिस्थापित किया है और तत्कालीन परिवेश तथा काव्य जगत को नई दिशा दी है।

"होगी जय, होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन
कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन।"

निराला ने अपनी शील एवं साहित्य दोनों में ही संकीर्णता का विरोध करते हुए अपनी महाप्रणता का का परिचय दिया है। इसके लिए उन्होंने करुणा और विद्रोह दोनों का सहारा लिया है। करुणा उपेक्षित, पीड़ित, एवं प्रताड़ित जनसमूह के लिए और विद्रोह अन्यायी शोषक वर्ग के प्रति। यही निराला की प्रगतिशील जनवादिता कि आधारशिला है। उन्होंने प्रारंभ से ही क्रांति का अवलंब लेकर मानवतावादी मूल्यों का अनुमोदन किया है।

निराला जी का दर्शन अद्वैतवादी है । शंकर के अद्वैत दर्शन का विवेचन और उसका काव्यात्मक रूप अनेक काव्य में उपलब्ध होता है। स्वामी प्रेमानंद जैसे विद्वानों के संपर्क में रहने का उन्हें सौभाग्य मिला, आश्रम की आध्यात्मिक पत्रिका 'समन्वय' के संपादन का अवसर मिला और रामकृष्ण साहित्य का हिंदी अनुवाद भी उन्होंने किया स्वामी विवेकानंद के नव्य वेदांत का उन पर गहरा प्रभाव दिखाई देता है।

रावण की पक्षधर शक्ति को "श्यामा विभावरी ,अंधकार" कहा गया है, जाहिर है कि अज्ञान के अंधकार में डूबी जनशक्ति ही अन्याय का जाने अनजाने पक्ष लेती है। जर्मनी में हिटलर हो या पूंजीवादी देशों में लोकतंत्र की आड़ में शोषकों का वर्चस्व वें इसी जनशक्ति का पक्ष लेने के कारण सत्ता में रहते हैं । न्याय के पक्ष को जिसका प्रतिनिधित्व इस कविता में राम करते हैं हारते हुए देखकर जो कवि विचलित हो रहा है उसे " रूद्र राम पूजन प्रताप तेज : प्रसार " कहा गया है जो कि ज्योति का ही एक रूप है ।[12]

विश्वपूंजीवाद जब साम्राज्यवाद की अवस्था में पहुंचकर दूसरे देशों को पराधीन बना लेता है तो राष्ट्रीय मुक्ति का दायित्व उस देश में उपजे राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग पर या उस वर्ग के कमजोर होने पर वहां के नवोदित मजदूर सर्वहारा वर्ग पर आ जाता है लेकिन उसे भी विजय प्राप्त भी हो सकती है जब पूरे राष्ट्र की जनशक्ति उसके साथ एकजुट खड़ी हो , जैसा कि राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों का इतिहास सिद्ध करता है। निराला ने यह कविता 1936 में लिखी थी लेकिन इसमें दी गई रणनीति से ही हमें आजादी मिली किसी एक व्यक्ति के चमत्कारी शक्ति से नहीं इस अर्थ में यह कविता एक प्रोफोटिक रचना है ।

'राम की शक्ति पूजा' जिजीविषा का काव्य है । जीवन शक्ति का काव्य है । 'राम की शक्ति पूजा' छायावाद के भीतर की रचना है, जिसको आनंद की सिद्धावस्था का काव्य कहा गया है। यह निराला की पुण्य भूत साधना का साकार विग्रह है।

कवि निराला एक ऐसे वातावरण में पले थे जिसमें संस्कृति का गहन रंग था। उनकी शिक्षा-दीक्षा ने भी उनके मानस को भी सांस्कृतिक संदर्भ से अंकुरित कर दिया था । यद्यपि वे क्रांतिकारी कवि थे, युग और समाज के जागरूक दर्शक थे, उनके चारों ओर पश्चिम दिशा के प्रवाहित एक नवीन वातावरण छा रहा था; फिर भी उनका काव्य इस बात का प्रमाण है कि वह भारतीय संस्कृति के सजग प्रहरी थे। पाश्चात्य सभ्यता के प्रति उन्होंने अपनी आंखें बंद नहीं कर ली थी,परंतु जो कुछ देखा उसे आत्मसात करने के लिए देखा, भारतीयता में सम्मिलित करने के लिए देखा ।उन्होंने नए वातावरण का उपयोग अपनी संस्कृति के विकास के हेतु भी किया था।

निराला की सांस्कृतिक अभिरुचि उनके व्यक्तित्व का प्रमुख घटक है। उन्होंने ऐतिहासिक एवं पौराणिक काव्य विषय भी ऐसे ही अपनाएं हैं जो सांस्कृतिक गरिमा से ओत प्रोत हैं । 'पंचवटी प्रसंग', 'सेवा प्रारंभ' , 'यमुना के प्रति' , 'राम की शक्ति पूजा' , 'तुलसीदास' ऐसे ही उदात्त काव्य भूमियाँ है।

'राम की शक्ति पूजा' में निराला ने अन्य सांस्कृतिक आयाम की प्रस्तुति की है । निराला की अभिरुचि राम के उस मन के प्रस्तुतीकरण में है जो कभी थकता नहीं, जो कभी हारता नहीं, विपरीत परिस्थितियां जिसे झुका नहीं सकती, दैन्य जिसकी प्रकृति के

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

विरुद्ध है। हठयोग की अन्तरसाधना भी इस वंदना के साथ सहयोग करती है । निराला इसी सांस्कृतिक आदर्श चरित्र से प्रभावित होकर जीवन संघर्षों में आजीवन डटे रहे :-

"ये अश्रु राम के आते ही मन में विचार
उद्वेल हो उठा शक्ति – खेल – सागर अपार
हो श्वसित पवन – उनचास , पिता पक्ष से तुमुल
एकत्र वक्ष पर बहा वाष्प उड़ा अतूल
शत घूर्णावर्त, तरंग-भंग, उठते पहाड़
जल राशि- राशि जल पर चढ़ता खाता पछाड़' "

डॉ द्वारिका प्रसाद सक्सेना ने निराला के काव्य की सांस्कृतिक दृष्टि का विवेचन करते हुए लिखा है :- "निराला की काव्य अनुभूति में तत्कालीन द्वंद ग्रस्त जीवन और जगत की विविधता भरी हुई है। उसमें प्राचीन परंपराओं एवं रूढ़ियों के विध्वंस का तीव्र स्वर भी सुनाई पड़ता है और नवीन समाज रचना का मधुर राग भी गूंज रहा है। समता एकता संवेदना एवं सहानुभूति की मधुर स्वर लहरी भी प्रवाहित होती हुई दिखाई देती है । साथ ही उसमें मानव प्रेम है, विश्व प्रेम है ,भगवत भक्ति है ,रक्त क्रांति की प्रेरणा भी, है नव निर्माण का शुभ संदेश भी है।"

विद्रोह भाव निराला के व्यक्तित्व का स्थाई अंश है व्यक्तित्व की छाप शैली और विचारधारा दोनों को प्रभावित करती है। 'कुल्ली भाट' उपन्यास में उन्होंने स्वीकारा है :-

"मैं ईश्वर सौंदर्य ,वैभव ,और विलास का कवि हूं फिर क्रांतिकारी ।"

कुछ आलोचकों का कहना है कि 'राम की शक्ति पूजा' के पात्र प्रतीक मात्र है ।लक्ष्मण सुमित्रानंदन पंत, रावण के विपक्षी आलोचक हैं , शक्ति महादेवी हैं । शिव जयशंकर प्रसाद ,सीता कविता तथा राम स्वयं निराला है । निराला का व्यक्तित्व राम के व्यक्तित्व के माध्यम से व्यक्त हुआ है । राम एवं निराला का जीवन संघर्षों से भरा हुआ है । आंतरिक एकता दोनों में है ।

'राम की शक्ति पूजा' का निश्चित संदेश मानव के लिए है जो कवि का परम उद्देश्य है । विदेशी दासता के साथ-साथ मानवता को बंधन मुक्त करना निराला का उद्देश्य है । निराशा और अंधकार ग्रस्त मानव को आशा का संदेश देकर अंधकार से मुक्त कराना निराला का उद्देश्य है । राम की निराशा वैयक्तिक नहीं अपितु समस्त भारतीयों की निराशा का प्रतीक है रावण विदेशी शक्ति का प्रतीक है । इसीलिए निराला को कहना पड़ा अन्याय जिधर है शक्ति भी उधर है :-[11]

"बोले रघुमणि – मित्रवर , विजय होगी न समर ,
यह नहीं रहा नर – वानर का राक्षस से रण ,
उतरी पा महाशक्ति रावण से आमंत्रण ;
अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति ! कहते छल -छल
हो गए नयन , कुछ बूंद पुनः ढलके द्रगजल"

निराला ने परामर्श स्वीकार करने एवं शक्ति की उपासना करने का तथ्य प्रस्तुत कर यह बतलाना चाहा है कि केवल शक्ति , पौरुष और पराक्रम तथा अस्त्र शस्त्रों के अभाव में युद्ध में सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती है । शक्तियों में सबसे बड़ी शक्ति आत्मा की शक्ति या आत्मिक शक्ति महाशक्ति को राम के बदन में लीन करवा दिया है। मानव एकाग्रता ,अनंत निष्ठा और तपस्या के द्वारा ही जीवन में लक्ष्य को सिद्ध किया जा सकता है। राम की आराधना इसी तथ्य की अभिव्यंजना करती है।

आशावाद काव्य का संदेश है ।अंतिम क्षणों तक आशा का पल्ला ना छोड़ने वाले को ही अंततः सफलता प्राप्त होती है। निराला जीवन संग्राम में मृत्यु पर्यंत संघर्ष रत रहे । इसीलिए अपने आदर्श नायक राम के द्वारा "न दैन्यं न पलायनम्" को स्वस्थ एवं कर्म प्रधान मार्ग पर चलने का संदेश दिया है ।घोर संकट में राम पराजय को स्वीकारते नहीं काव्य का यही संदेश है।

निष्कर्षत: निराला युग प्रवर्तक कवि हैं ।उनकी रचनाओं में न केवल उनका युग बल्कि आज का एवं आने वाला युग भी बिंबित होता है । उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से अतीत वर्तमान एवं भविष्य की मूकता को वाणी प्रदान की । कवि ने आम आदमी को चेतना दीप्त करने का प्रयास किया । अंधकार के साम्राज्य से निजात पाने के लिए रश्मि की खोज की। निराला के शब्दों में :-

"पत्रोत्कंठित जीवन का विष बुझा हुआ है ,
आज्ञा का प्रदीप जलता है हृदय कुंज में,
अंधकार पथ एक रश्मि से सुझा हुआ है,
दिड्निर्णय ध्रुव से जैसे नक्षत्र पुंज में ।"[12]

संदर्भ

1. मुकुटधर पांडे, छायावाद एंव् अन्य श्रेष्ठ निबंध

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 5, Issue 6, June 2018

2. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी: कवि निराला

3. निराला :परिमल

4. रामविलास शर्मा :निराला की साहित्य साधना

5. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी: कवि निराला

6. डॉ केदारनाथ सिंह आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान

7. नामवर सिंह :छायावाद

8. रामविलास शर्मा निराला की साहित्य साधना भाग 2

9. निराला: गीतिका

10. रामविलास शर्मा निराला की साहित्य साधना भाग 2

11. जोसेफ व्रड्स्की (अनुवादित प्रभात त्रिपाठी) पूर्वाग्रह संयुक्तांक 12

12. नामवर सिंह छायावाद